Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

विश्व परिवार

● अंक : 95 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 26 सितंबर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

दुख को मिटाना है तो पहले दुख के स्रोत को मिटाना अनिवार्य है।

If grief are to be eradicated then first of all eradication of its source is compulsory.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

विश्व विजय सिंह तोमर युवा आयोग के नए अध्यक्ष नियुक्त

रायपुर (विसं)। राज्य शासन द्वारा श्री विश्व विजय सिंह तोमर गृह जिला सरगुजा को छत्तीसगढ़ राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। इस आशय का आदेश प्रदेश के खेल एवं युवा कल्याण विभाग मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर से जारी कर दिया गया है।

अभियान चलाकर बनाया जा रहा आयुष्मान कार्ड

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय प्रदेश में आयुष्मान पखवाड़ा चलाकर लोगों का कार्ड बनवाने के निर्देश दिए हैं। जशपुर जिले के ग्राम भागलपुर के नागरिकों को आयुष्मान कार्ड के संबंध में जानकारी दी गई और उसके लाभ के बारे में बताया गया। मौके पर ही 12 लोगों का कार्ड बनाकर दिया गया है।

हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती परीक्षा रद्द करने की याचिका खारिज की

बिलासपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा 2018 के अभ्यर्थियों के लिए हाईकोर्ट की डिवीजनल बेंच ने एक बार फिर से परीक्षा रद्द करने की याचिका को खारिज कर दिया है, जिससे परीक्षा परिणाम जारी होने का रास्ता साफहो गया है। कोर्ट ने पहले शासन को 90 दिनों का समय देते हुए 10 सितंबर तक परीक्षा परिणाम जारी करने के निर्देश दिए थे। गृहमंत्री विजय शर्मा ने अभ्यर्थियों को आश्वसान दिया है कि अधिकतम 2 सप्ताह के भीतर परीक्षा परिणाम जारी कर दिया जाएगा।

रोजगार सृजन के ठोस प्रयासों से छत्तीसगढ़ सबसे कम बेरोजगारी दर वाले राज्यों में शामिल : मुख्यमंत्री

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के देश के सबसे कम बेरोजगारी दर वाले राज्यों में पांचवा स्थान प्राप्त करने पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा रोजगार सृजन के क्षेत्र में किए गए ठोस प्रयासों का यह सकारात्मक परिणाम है। उन्होंने कहा है कि आज हमने एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। छत्तीसगढ़ ने देश में सबसे कम बेरोजगारी दर वाले राज्यों में पांचवां स्थान प्राप्त किया है। यह सर्वेक्षण भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (ह्स्स्ह्) द्वारा किया गया है।

हमारी सरकार ने प्रदेश में युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं। खासतौर पर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित किया है। जिसके कारण हमारा छत्तीसगढ़ अब बड़े राज्यों को भी पीछे छोड़ चुका है, जो कम बेरोजगारी दर के मामले में राज्य की बड़ी सफलता को दर्शाता है। निश्चित ही यह प्रदेश के लिए गौरवान्वित करने वाला पल है। समस्त छत्तीसगढ़वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

छत्तीसगढ़ में 78 नए पीएम श्री स्कूलों की स्वीकृति, मुख्यमंत्री विष्णुदेव ने जताया हर्ष

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा 78 नये पीएम श्री स्कूलों की स्वीकृति मिली है। इन स्कूलों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उत्कृष्ट विज्ञान प्रयोगशालाएं पुस्तकालय, व्यावसायिक लैब्स की व्यवस्था होगी। इससे पहले प्रदेश को 263 पीएमश्री स्कूल स्वीकृत किये गये थे, जिनकी संख्या अब बढ़कर 341 हो गई है। सीमए विष्णुदेव ने नए 78 पीएम श्री स्कूलों की स्वीकृति मिलने पर हर्ष का विषय बताया है। सीएम ने एक्स अकाउंट में लिखा है कि नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदेश में 78 नए पीएम श्री स्कूलों की स्वीकृति मिलना अत्यंत हर्ष का विषय है। इन स्कूलों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उत्कृष्ट विज्ञान प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय, व्यावसायिक लैब्स की व्यवस्था होगी, जो छत्तीसगढ़ को शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाईयों पर ले जाएगी।

सोनीपत में बोले पीएम मोदी, कांग्रेस ने हरियाणा को दलालों और दामादों के हवाले कर दिया था

सोनीपत (आरएनएस)। हरियाणा के सोनीपत जिले के गोहाना में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर जमकर प्रहार किया। पीएम मोदी ने मंच से कांग्रेस पर वार करते हुए कहा कि इन्होंने प्रदेश को दलालों और दामादों के हवाले कर दिया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस का शाही परिवार देश का सबसे भ्रष्ट परिवार है और जब हाईकमान भ्रष्टाचारी होता है, तो नीचे लूट का खुला लाइसेंस मिल ही जाता है। याद कीजिए, 10 साल पहले जब हरियाणा में कांग्रेस की सरकार थी, तब कैसे प्रदेश को लूटा गया था। यहां किसानों की जमीनों को जमकर लूटा गया, प्रदेश को दलालों और दामादों के हवाले कर दिया गया था। दलालों और दामादों से बचना है तो कमल ही बचाएगा। किस-किस कांग्रेस नेताओं पर आरोप लगे हैं, ये आप अच्छे से जानते हैं।

उन्होंने कहा कि हरियाणा में 10 साल पहले एक भी ऐसी नौकरी नहीं थी, जिसमें खर्ची और पर्ची नहीं चलती हो। सरकारी ठेकों में जमकर भ्रष्टाचार होता था। हरियाणा को लूटकर खाने वाली ऐसी करप्ट कांग्रेस को राज्य की सरकार से दूर रखना है, तब जाकर

हरियाणा बचेगा। आप पर तो मेरा हक है, मुझे भी तो हरियाणा का कर्ज चुकाना है। मुझे खुशी है कि हरियाणा के लोग इतने समझदार हैं कि केंद्र और राज्य की क्या ताकत होती है, जितना हरियाणा के लोग समझते हैं हिंदुस्तान में, उतना और कोई नहीं समझता है, इसलिए हरियाणा में उसकी ही सरकार बनती है, जिसकी दिल्ली में सरकार होती है।

पीएम मोदी ने कहा कि आप भी जानते हैं, जहां भी कांग्रेस को मौका मिला, जहां-जहां कांग्रेस ने पैर रखा, वहां भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद पक्का है। भारत के सरकारी सिस्टम में भ्रष्टाचार पैदा करने वाली, पालने-पोसने वाली कांग्रेस है। कांग्रेस ने हमेशा ही एससी, एसटी और ओबीसी को भागीदारी से वंचित रखा है। ये तो बाबा साहेब अंबेडकर थे, जिन्होंने दलितों को आरक्षण दिया, वरना ओबीसी की तरह दलितों को भी आरक्षण के लिए कांग्रेस की हार का इंतजार करना पड़ता। जब-जब कांग्रेस सरकार से दूर रही है, तब-तब एससी, एसटी और ओबीसी को उनका हक मिला है। जब-जब कांग्रेस, सरकार में रही है, उसने दलितों-पिछड़ों का हक छीना है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा की भाजपा सरकार ने किसानों से 24 फसलें एमएसपी पर खरीदने का फैसला लिया। जब यहां कांग्रेस की सरकार थी, तो एमएसपी पर फसलें खरीदने से सबसे ज्यादा नफरत करती थी। यही कांग्रेस की सच्चाई है, जो हरियाणा के किसान को जरूर जाननी चाहिए। भाजपा सरकार किसानों के हक में लगातार बड़े-बड़े फैसले ले रही है। अपनी तीसरी पारी के सौ दिनों में ही हमारी सरकार ने किसानों के लिए अनेक बड़े फैसले लिए हैं।

साय कैबिनेट में मंत्री के दो पद खाली, नए मंत्रियों के शपथ को लेकर बीजेपी में असमंजस

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के विष्णुदेव साय कैबिनेट में मंत्री के दो पद खाली हैं। नए मंत्रियों के शपथ को लेकर बीजेपी में असमंजस की स्थिति है। छत्तीसगढ़ प्रभारी नीतीन नबीन चाह रहे समय को देखते मंत्रिमंडल का पुनर्गठन कर दिया जाना चाहिए। मगर पार्टी का एक वर्ग इस पर असमंजस में दिखाई दे रहा है। छत्तीसगढ़ के कैबिनेट में मुख्यमंत्री को छोड़कर 12 मंत्रियों का कोटा है। याने 1 प्लस 12। कैबिनेट में इस समय दो पद रिक्त हैं। वो ऐसे कि दिसंबर 2023 में विष्णुदेव साय सरकार के गठन के समय एक पद खाली रखा गया था। और दूसरा, बृजमोहन अग्रवाल के सांसद चुने जाने के बाद रिक्त हुआ। याने छत्तीसगढ़ में इस समय 10 मंत्री हैं। अरुण साव, विजय शर्मा, ओपी चौधरी, रामविचार नेताम, केदार कश्यप, दयालदास बघेल, श्यामबिहारी जायसवाल, लखनलाल देवांगन, टंकराम वर्मा और लक्ष्मी राजवाड़े। मंत्री बनने वाले विधायकों को लेकर अटकलों का दौर भी जारी रहा। मई में लोकसभा चुनाव संपन्न होने के बाद मंत्रिमंडल के पुनर्गठन की चर्चाएं और तेज हुई थी।

मेक इन इंडिया के 10 वर्ष पूरे होने पर मोदी बोले- हम सब मिलकर विकसित भारत बनाएंगे

नई दिल्ली (आरएनएस)। मेक इन इंडिया के 10 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह आंदोलन पिछले एक दशक से उन सभी लोगों के लगातार प्रयासों का परिणाम है, जो इसे सफल बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

पीएम मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज हम मेक इन इंडिया के 10 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। मैं उन सभी लोगों को बधाई देता हूं जो पिछले एक दशक से इस अभियान को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। 'मेक इन इंडिया' हमारे देश को विनिर्माण और नवाचार का केंद्र बनाने के लिए 140 करोड़ भारतीयों के सामूहिक संकल्प को दर्शाता है। उन्होंने आगे कहा, यह उल्लेखनीय है कि विभिन्न क्षेत्रों में निर्यात कैसे बढ़ा है, क्षमताएं निर्मित हुई हैं और इस प्रकार से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। भारत सरकार हर संभव तरीके से 'मेक इन इंडिया' को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सुधारों में भारत की प्रगति भी जारी रहेगी। हम सब मिलकर एक आत्मनिर्भर और विकसित भारत का निर्माण करेंगे!

वहीं, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, प्रधानमंत्री मोदी ने विनिर्माण में भारत की जबरदस्त क्षमता को उजागर किया है। आत्मनिर्भर भारत के मंत्र के साथ, हमारा देश विनिर्माण में अग्रणी और निवेश के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में उभरा है, जिससे हमारे युवाओं के लिए अवसरों की दुनिया बन गई है। बता दें कि मेक इन इंडिया अभियान का उद्देश्य भारत को विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है, ताकि रोजगार के नए अवसर पैदा हो और देश की आर्थिक स्थिति और मजबूत हो सके।

अब महिलाओं को हर महीने सरकार देगी 1000 रुपए

नई दिल्ली (आरएनएस)। राजधानी दिल्ली में आतिशी सरकार ने राज्य के विकास के लिए फैसले लेने शुरू कर दिए है। इसी बीच दिल्ली सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्री कैलाश गहलोत ने मंगलवार को पदभार ग्रहण करते हुए कहा कि सभी लंबित प्रस्तावों और योजनाओं को मंजूरी देंगे। उन्होंने कहा कि, महिलाओं के लिए मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना भी जल्द ही आगे बढ़ाई जाएगी। जिससे राज्य की हर महिला को 1000 रुपए महीना दिए जाएंगे।

इस योजना से दिल्ली में लगभग 50 लाख महिलाओं को लाभ मिलने की संभावना है। इस योजना के तहत 2024-25 के बजट में लाभार्थियों के लिए 2,714 करोड़ रुपये का बजट प्रस्तावित किया गया है। इसके तहत 18 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं को हर महीने 1000 रुपये दिए जाएंगे। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय अपने पास बरकरार रखते हुए कैलाश गहलोत ने मंगलवार को कार्यभार संभाला। पदभार संभालते हुए गहलोत ने खुद को अरविंद केजरीवाल का 'हनुमान' बताया और भरोसा दिलाया कि वे लंबित कामों को पूरा करेंगे। गहलोत ने कहा, अरविंद केजरीवाल का हनुमान बनकर मेरी प्राथमिकता सभी लंबित कार्यों को पूरा करना और यह सुनिश्चित करना है कि अरविंद केजरीवाल फिर से दिल्ली के मुख्यमंत्री बनें।

कंगना रनौत के बयान पर केजरीवाल का तंज, 'बज रही खतरे की घंटी

महम (आरएनएस)। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को महम विधानसभा में चुनावी सभा को संबोधित किया। उन्होंने जनता को चेताते हुए कहा, अब खतरे की घंटी बज रही है। उन लोगों की नियत खराब है। भारतीय जनता पार्टी की सांसद कंगना रनौत ने मांग की है कि तीन कृषि कानूनों का फिर लाना चाहिए।

केजरीवाल ने कहा, तीन कृषि कानूनों के विरोध में शुरू हुए किसान आंदोलन के दौरान आपके घरों से कोई न कोई दिल्ली बॉर्डर पर धरना देने आया था। दिल्ली का मुख्यमंत्री होने के नाते मैंने आपके परिवार के सदस्यों की सेवा की थी। मुझसे जो हो सकता था, मैंने मदद की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लगा कि वह चुनाव हार जाएंगे, तो उन्होंने तीनों कृषि कानून वापस ले लिए।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में 54.11 फीसदी मतदान

जम्मू-कश्मीर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनावों के दूसरे चरण में भी अच्छी वोटिंग दर्ज की गई है। चुनाव आयोग की तरफ से जारी किए गए शाम 7 बजे के आंकड़े के अनुसार 26 सीटों के लिए कुल 54.11 फीसदी वोट पड़े, हालांकि इस आंकड़ें में कुछ बढ़ोतरी की उम्मीद है। दूसरे चरण में छह जिलों की 26 सीटों के लिए सबसे अधिक 71.81 फीसदी मतदान उस रियासी जिले में हुआ। सबसे कम 27.37 वोट श्रीनगर जिले की आठ सीटों पर पड़े। चुनाव आयोग ने बताया कि जिलों के अलावा अगर विधानसभा सीटों पर हुई वोटिंग को देखा जाए तो 26 विधानसभा सीटों में सबसे अधिक वोट रियासी जिले की श्री माता वैष्णो देवी सीट पर सबसे अधिक रिकॉर्ड 75.29 वोट पड़े। जम्मू संभाग के रियासी राजौरी और पुंछ जिले के अलावा घाटी में श्रीनगर और बडगाम जिले की इन 26 सीटों के लिए 239 उम्मीदवार मैदान में हैं। उनकी किस्मत का फैसला 25 लाख 78 हजार मतदाता करेंगे।

सतर्कता जागरूकता अभियान-2024 : एसईसीएल सीवीओ हिमांशु जैन ने विभागाध्यक्षों एवं क्षेत्रीय महाप्रबन्धकों के साथ की समीक्षा बैठक

बिलासपुर (विश्व परिवार)। केंद्रीय सतर्कता आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार एसईसीएल में चलाए जा रहे तीन महीने के सतर्कता जागरूकता अभियान को लेकर आज सीवीओ श्री हिमांशु जैन ने एक समीक्षा बैठक ली। बैठक में एसईसीएल मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं क्षेत्रीय महाप्रबंधक (वीसी के माध्यम से) उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान श्री जैन ने कहा कि इस वर्ष के अभियान की थीम सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि है। इस वर्ष का अभियान 5 प्रमुख बिन्दुओं पर केन्द्रित है जिसमें क्षमता निर्माण, सिस्टम में सुधार, मैनुअल/सर्कुलर आदि को अपडेट करना, 30 जून 2024 से पूर्व प्राप्त शिकायतों का निपटारा एवं डिजिटलाइजेशन शामिल हैं।

उन्होने सभी विभागाध्यक्षों से कहा कि सतर्कता विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रमों में अपने विभाग से ज़्यादा से ज़्यादा अधिकारियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। श्री जैन ने क्षेत्रीय महाप्रबंधकों एवं नोडल अधिकारियों से चर्चा करते हुए एसईसीएल के संचालन क्षेत्रों में चलाए जा रहे सतर्कता जागरूकता अभियान की समीक्षा।

उन्होने समयबद्ध तरीके से अभियान की गतिविधियों के कार्यान्वयन एवं निवारक सतर्कता को लेकर उचित कदम उठाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में महाप्रबंधक (सतर्कता) श्री प्रकाश चंद्रा भी उपस्थित रहे।

321 ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों की जल्द होगी नियुक्ति, मुख्यमंत्री साय की पहल पर वित्त विभाग ने दी अनुमति

परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों के दस्तावेजों का सत्यापन 30 सितंबर से 10 अक्टूबर तक

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की पहल पर राज्य में 321 नये ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों की नियुक्ति का मामला अंतत: सुलझ गया है। वित्त विभाग ने ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों की नियुक्ति के लिए अपनी स्वीकृति दे दी है। कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम के निर्देशानुसार कृषि विभाग ने व्यापम द्वारा जारी सूची के अनुसार सफल अभ्यर्थियों की नियुक्ति के लिए दस्तावेजों के सत्यापन की सूचना जारी कर दी गई है। अभ्यर्थियों के दस्तावेजों का सत्यापन इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर लाभांडी रायपुर स्थित राज्य कृषि प्रबंधन एवं विस्तार प्रशिक्षण संस्थान समिति में 30 सितम्बर से शुरू होगा और 10 अक्टूबर तक चलेगा। दस्तावेजों के सत्यापन के उपरांत अभ्यर्थियों के नियुक्ति के आदेश जारी होंगे।

यहां यह उल्लेखनीय है कि कृषि विभाग के अंतर्गत ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों के रिक्त पदों की पूर्ति के लिए छत्तीसगढ़ व्यवसायिक परीक्षा मण्डल (व्यापम) द्वारा 04 फरवरी को प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया गया था। जिसका परिणाम मार्च महीने में घोषित किया गया। तब से लेकर अब तक सफल अभ्यर्थी

अपनी नियुक्ति की प्रतीक्षा में थे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम की पहल से अभ्यर्थियों की नियुक्ति का यह लंबित मामला न सिर्फ सुलझा बल्कि वित्त विभाग ने इसके लिए विधिवत स्वीकृति दे दी है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व वाली छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा युवाओं की शासकीय सेवाओं में भर्ती का सिलसिला तेजी से शुरू कर दिया गया है। शासकीय विभागों में रिक्त पदों की पूर्ति के लिए पदों की स्वीकृति एवं विज्ञापन जारी करने के साथ ही नई नियुक्ति के लंबित मामलों को भी छत्तीसगढ़ सरकार पूरी गंभीरता से निराकृत करने में जुटी है। ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी की प्रतियोगी परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों के दस्तावेजों का सत्यापन कम्बाईंड रैंकिंग के आधार पर निर्धारित तिथियों में प्रात: 10.30 बजे से शाम 4.30 बजे तक किया जाएगा। दस्तावेज सत्यापन के दौरान अभ्यर्थी को मूल प्रमाण पत्रों तथा उक्त प्रमाण पत्रों की दो सेट स्वयं प्रमाणित छायाप्रति लेकर आना होगा। अधिक जानकारी के लिए https://agriportal.cg.nic.in/ पर अवलोकन किया जा सकता है।

कृषि संचालनालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार 30 सितम्बर को सरल क्रमांक 1 से 240 तक, 01 अक्टूबर को सरल क्रमांक 241 से 480 तक, 03 अक्टूबर को सरल क्रमांक 481 से 720 तक, 04 अक्टूबर को सरल क्रमांक 721 से 960 तक, 07 अक्टूबर को सरल क्रमांक 961 से 1210 तक और 08 अक्टूबर को सरल क्रमांक 1211 से 8194 के मध्य दिव्यांग श्रेणी के आवेदक तथा सरल क्रमांक 01 से 14028 (समस्त घोषित परिणाम) के मध्य भूतपूर्व सैनिक के आवेदकों का दस्तावेजों का सत्यापन किया जाएगा। किन्हीं विशेष परिस्थितियों के कारण ऐसे आवेदक जो अपनी कम्बाईंड रैंकिंग के अनुसार निर्धारित तिथि उपस्थित नहीं हो पाए हो, तो वे 9 एवं 10 अक्टूबर को रिजर्व दिवस में उपस्थित होकर अपने दस्तावेजों का सत्यापन करा सकेंगे।

19वीं क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति (जेडआरयूसीसी) की इस वर्ष की दूसरी बैठक रेलवे मुख्यालय बिलासपुर में सम्पन्न हुई

बिलासपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे 19वीं क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की इस वर्ष की दूसरी बैठक आज दिनांक 25 सितंबर' 2024 को महाप्रबंधक दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, सुश्री नीनु इटियेरा की अध्यक्षता में सौहार्दपूर्ण एवं सहयोगात्मक वातावरण में संपन्न हुई। इस बैठक में क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के 12 सदस्य उपस्थित थे। बैठक में सदस्यों के अतिरिक्त दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के सभी विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्ष उपस्थित थे। बैठक के प्रारम्भ में सदस्यों का स्वागत करते हुए उप महाप्रबंधक (सा.) एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति (ZRUCC) के सचिव श्री समीर कांत माथुर ने इस बैठक की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की समस्त उपलब्धियों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आप सभी सदस्यों के सुझाव एवं सहयोग समाहित है।

बैठक में सुश्री नीनु इटियेरा, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे एवं अध्यक्ष दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति (ZRUCC) ने अपने उद्बबोधन में माननीय सदस्यों का इस बैठक में स्वागत करते हुए यात्री सुविधाओं के विकास हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यो एवं जोन की उपलब्धिओं से माननीय सदस्यों को अवगत कराया। उन्होनें कहा कि यात्रियों की सुविधा और उनकी अपेक्षा को ध्यान में रखते हुए रेलवे लगातार यात्री सुविधाओं के विकास कार्य कर रहा है। अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत बिलासपुर, रायपुर एवं दुर्ग का पूनर्विकास तथा 47 स्टेशनों का उन्नयन किया जा रहा है। महाप्रबंधक ने सभी माननीय सदस्यों के साथ विचार विमर्श करते हुए कहा कि दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में सुरक्षित रेल परिचालन के लिए सभी रेलकर्मी निरंतर अथक प्रयास कर रहे हैं। यात्री सुविधाओं एवं सेवाओं में निरंतर विकास हम सब का उद्देश्य है। उन्होने सदस्यों के सकारात्मक सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

महाप्रबंधक के संबोधन के पश्चात् क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के सदस्यों के समक्ष उप महाप्रबंधक (सा.) एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे क्षेत्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के सचिव श्री समीरकांत माथुर ने पावरपाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के द्वारा उपलब्ध कराई गयी यात्री सुविधा एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। इस बैठक में यात्री सुविधाओं से संबंधित तथा यात्री सुविधा विकास एवं परियोजनाओं से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

विश्व परिवार

रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार

रायपुर, गुरुवार 26 सितंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर बच्चों ने लगाए बरगद के पौधे, किया पं. दीनदयाल को स्मरण

आरंग (विश्व परिवार)। बुधवार को शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर बच्चों व शिक्षकों ने बरगद का पौधे रोपित कर उन्हें स्मरण किया। वहीं शिक्षकों ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवनी को बताते हुए देश के प्रति उनके योगदान की जानकारी दिया। वहीं स्कूल परिसर में बरगद लगाकर उनकी जन्मदिन को यादगार ढंग से मनाया गया।इस अवसर पर संस्था प्रमुख सहित सभी शिक्षकों व स्कूली बच्चों की उपस्थिति व सहभागिता रही।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए आज मुकेश शाह देंगे टिप्स

रायपुर (विश्व परिवार)। गुजराती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, देवेन्द्र नगर में कल 26 सितंबर को सुबह 11 बजे से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए एक सेमीनार आयोजित किया गया है जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर शिक्षाविद् मुकेश शाह अपने प्रेरक वक्तव्य के द्वारा उन्हें आगे बढ़ने के सूत्र बताएंगे। स्कूल के प्राचार्य डॉ. शैलेष शर्मा ने बताया कि इस सेमीनार में कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के करीब पांच सौ विद्यार्थी शामिल रहेंगे। वक्ता के तौर पर मुकेश शाह उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए महत्वपूर्ण टिप्स देने के साथ मोबाइल से अपने आप को दुर रखने आवश्यक मार्गदर्शन देंगे। प्राचार्य डॉ. शर्मा ने बताया कि विद्यालय में समय समय पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इस प्रकार के प्रेरणादायी कार्यक्रम कराए जाते हैं जिससे उनका व्यक्तित्व और निखरे।

श्रीमती पी. भानुमती अम्मा का निधन

भिलाई (विश्व परिवार)। एमआईजी-2, 449 हुडको निवासी श्रीमती पी. भानुमती अम्मा (90 वर्ष) का सोमवार 23 सितंबर को निधन हो गया। उनकी अंतिम यात्रा गुरूवार 26 सितंबर, दोपहर 12 बजे उनके निवास से रामनगर मुक्तिधाम, भिलाई के लिए प्रस्थान करेगी। वे स्व. श्री पी.ए. नायर की पत्नी तथा लीला, पद्मा, अम्बिका, विनोद नायर, विमल नायर की माताजी थीं। मो. 9425511424, 9584222299 (विमल नायर)।

शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का धरातल पर करें कारगर क्रियान्वयन: कमिश्नर बस्तर डोमन सिंह

जगदलपुर (विश्व परिवार)। कमिश्नर बस्तर संभाग श्री डोमन सिंह ने कहा कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का धरातल पर कारगर क्रियान्वयन करें। संभाग स्तरीय अधिकारी अपने अधीनस्थ जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों के कार्यों की नियमित तौर पर समीक्षा करें और प्रभावी तरीके से योजनाओं को जनसाधारण तक पहुंचाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास करें। जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों की बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से करें, ताकि समय की बचत हो तथा फील्ड में उन्हें काम करने का ज्यादा अवसर मिल सके। वहीं क्षेत्र भ्रमण के दौरान योजनाओं के क्रियान्वयन का निरीक्षण कर सतत मॉनिटरिंग करें और मैदानी अधिकारियों-कर्मचारियों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करें। मैदानी स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने अधिकारियों-कर्मचारियों का उत्साहवर्धन भी करें, जिससे अन्य अधिकारियों-कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिल सके। कमिश्नर बस्तर संभाग श्री डोमन सिंह ने बुधवार को कमिश्नर कार्यालय के सभागार में आयोजित संभाग स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक में उक्त निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत अपने विभागीय कार्यालय सहित अधीनस्थ कार्यालय एवं परिसरों में स्वच्छता एवं साफ-सफाई अभियान चलाए जाने कहा।

बच्चों को सुरक्षित महसूस कराना एवं अपने घर के बच्चों के समान ही देखभाल करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी : कलेक्टर

सभी हॉस्टलों में प्रशासनिक अधिकारियों सहित पुलिस कंट्रोल का नंबर 3 दिवस के भीतर अंकित करने कलेक्टर ने दिए निर्देश

कलेक्टर की अध्यक्षता में छात्रावास अधीक्षकों की समीक्षा बैठक

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी की अध्यक्षता में आज आदिवासी विकास विभाग द्वारा संचालित छात्रावास अधीक्षकों की कार्यो की समीक्षा किया गया। उक्त बैठक में छात्रावास अधीक्षक ही नही बल्कि मंडल संयोजक, विभाग के चतुर्थ वर्ग के कर्मचारी गण भी उपस्थित रहे है। कलेक्टर श्री सोनी ने दो टूक कहा की जिले के किसी भी बच्चें घर से दूर अपने माता-पिता को छोड़कर पढ़ाई करनें के उद्देश्यों से आते है उनके उद्देश्यों को पूरा करनें के लायक बनना हम सब का दायित्व है। बच्चों को रोज रेडियों में समाचार सुनने के लिये प्रेरित करें, और कोई एक दो अखबार पढ़ने कहा है। हॉस्टल में सुरक्षा के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नही की जाएगी। बच्चों को सुरक्षित महसूस कराना एवं अपने घर के बच्चों के समान ही देखभाल करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जिस तरह हम अपने बच्चों के प्रति व्यवहार रखते है ठीक उसी तरह हॉस्टल के बच्चों के प्रति होना चाहिए.बच्चें घर से दूर अपने माता-पिता को छोड़कर पढ़ाई करनें के उद्देश्यों से आते है उनके उद्देश्यों को पूरा करनें के लायक बनना हम सब का दायित्व है। बच्चों को रोज रेडियों में समाचार सुनने के लिये प्रेरित करें, और कोई एक दो अखबार पढ़ने कहा है। जिले के सभी हॉस्टलों में प्रशासनिक अधिकारियों सहित पुलिस कंट्रोल का नंबर का बोर्ड तीन दिवस के भीतर अंकित करने के निर्देश छात्रावास अधीक्षकों को दिए है। साथ ही बोर्ड की फोटो ग्रुप में शेयर करने कहा गया है। उन्होंने आगे कहा की हॉस्टल में किसी भी तरह घटना होने पर तत्काल एसडीएम एवं सहायक आयुक्त को जानकारी दी जानी चाहिए. किसी तरह सूचना न देना भी एक अपराध की तरह है। श्री सोनी ने आगे कहा कि हॉस्टल में बच्चों के रुचि अनुसार उनकी पढ़ाई, खेलकूद, कला से सम्बंधित हॉबी क्लब की गठन जरूर करें। हॉस्टल की साफ सफाई एवं खाने की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने कहा गया है। छात्रावास में खाद्यान्न उठाव में पारदर्शिता लाने मीनू चार्ट के अनुसार भोजन व्यवस्था कराने, छात्रावास की संचालन सुचारू रूप से करने, अधीक्षको की नियमित उपस्थिति, छात्र-छात्रओं की उपस्थिति संबंधी जानकारी हासिल की। साथ ही छात्रावास भवनों के रख-रखाव, किचन गार्डन, नवाचार, बच्चों को सुचारू रूप से अध्यापन कार्य में मदद करने को कहा। विशेष रूप से कन्या छात्रावासों में सीसीटीवी कैमरे प्रतिदिन चालू रखने एवं महिला होम गार्ड के नियमित रूप से उपस्थित रहने के निर्देश दिए है। बैठक के दौरान उन्होनें कहा कि भविष्य में औचक निरीक्षण करने के भी बात कही। इसके साथ ही स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को बच्चों को रूटीन स्वास्थ्य चेकअप करनें कहा हैं अच्छी स्वास्थ्य ही अच्छे शिक्षा का आधार है। बच्चों को गुड टच बेड टच के बारे में अवश्य बताये। उन्होंने कई बिंदुओं पर अधीक्षकों से चर्चा कर जानकारी लिया। अधीक्षकों ने भी कलेक्टर से अपनें विचार भी साझा किये। सहायक आयुक्त लोकेश्वर पटेल ने बताया की जिला में कुल 78 हॉस्टल है जहां लगभग 3600 छात्र पढ़ाई करते है। इस बैठक मे सहायक आयुक्त लोकेश्वर पटेल जिला के सभी हॉस्टल अधीक्षक उपस्थित थे।

सामरी विधायक उद्धेश्वरी पैकरा ने सायकल वितरण कर खुशियां बिखेरी, कन्या विद्यालय के 220 छात्राओं को मिली सायकल

बलरामपुर (विश्व परिवार)। कुसमी शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कुसमी में मंगलवार को सामरी विधायक उद्धेश्वरी पैकरा साइकिल वितरण कार्यक्रम में शामिल हुई। इस कार्यक्रम में वह बतौर मुख्य अतिथि थीं। इस मौके पर उन्होंने कक्षा नवमी में अध्यनरत 220 छात्राओं को सायकल वितरण कर खुशियां बिखेरी। सायकल पाकर छात्राओं के चहरे खिल उठे। छात्राओं को सम्बोधित करते हुए विधायक ने कहा बेटियों को शिक्षा हेतु भाजपा सरकार प्रोत्साहित कर रहीं हैं। पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह के सरकार के दौरान से ही सरस्वती सायकल योजना शुरू किया गया था। ताकि छात्राओं को स्कूल आने में किसी तरह कि दिक्क़त मत हो। राज्य सरकार बेटियों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के साथ ही स्कूलों से उनकी दूरियां मिटाने का काम सरस्वती साइकिल योजना के माध्यम से कर रही है। इससे आज बेटियां शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहीं हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य मानिकचंद गुप्ता ने विधायक के समक्ष विद्यालय के प्रवेश द्वारा सह गेट निर्माण, शौचालय निर्माण सहित कैंपस के अंदर मैदान में जल भराव को रोकने हेतु समतलीकरण, इसी सत्र से विद्यालय में व्यावसायिक कक्षा आरंभ हो जाने के कारण और चार अतिरिक्त कक्ष का निर्माण आदि कार्यों की मांग रखी। प्राचार्य ने यह भी बताया कि इस संस्था की दर्ज संख्या 824 है तथा यह जिले का सबसे बड़ा कन्या हायर सेकेण्डरी विद्यालय होने के बावजूद यहां संसाधनों की कमी के साथ कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बस्तर ओलंपिक 2024 के लिए 1 अक्टूबर से होगा पंजीयन शुरू

जगदलपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन द्वारा बस्तर ओलंपिक 2024 जो छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस 01 नवंबर से आयोजित किया जा रहा है में भाग लेने के लिए खिलाड़ियों का पंजीयन अनिवार्य किया गया है। उक्त बस्तर ओलम्पिक 2024 के लिए 01 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक सम्बन्धित जनपद पंचायत कार्यालय तथा कार्यालय विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी सहित कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, नगर पंचायत, नगर पालिक निगम और खेल विभाग में खिलाड़ियों का पंजीयन किया जाएगा। खिलाड़ियों का पंजीयन हेतु ऑफलाइन एवं आनलाइन दोनों ही सुविधा होगी। पंजीकृत खिलाड़ी अपने विकासखंड में प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे तथा बगैर पंजीयन के खिलाड़ी स्पर्धा में शामिल नहीं हो सकेंगे।

विष्णु के सुशासन का हो रहा असर, एक फोन पर समस्या का हो रहा निराकरण

मेकाहारा में मरीज को एक फोन पर मिली बड़ी मदद, तत्काल बनाया गया आयुष्मान कार्ड, मरीज का हुआ उपचार

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन में अब एक फोन से समस्या का निराकरण हो रहा है। श्याम नगर निवासी श्रीमती शिवानी सिंह ने आयुष्मान कार्ड न होने के कारण इलाज नहीं होने को लेकर शिकायत की थी। उन्होंने बताया कि उनकी बडी मां श्रीमती विमला राजपूत के हार्ट का आपरेशन होना था। उनका आयुष्मान कार्ड नहीं बना है। जिस कारण उनका इलाज नहीं हो पा रहा था। उन्होंने बताया कि मेकाहारा प्रबंधन कार्ड न होने के चलते उनसे 75 हजार रूपए जमा करने के लिए कह रहे है। जिसके बाद उन्होंने कलेक्टोरेट के जन समस्या निवारण कॉल सेंटर में फोन किया। जहां से संबंधित विभाग को मामले की जानकारी दी गई। जिसके बाद तुरंत उनका आयुष्मान कार्ड बनवा दिया गया। साथ ही उनका इलाज भी शुरू करवा दिया गया। जिसकी जानकारी श्रीमती सिंह को दी गई। जिसके बाद उन्होनें प्रसन्न्ता जाहिर की साथ ही मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

जल्द मिलेगी गांव को नए पानी टंकी से पानी : मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के सुशासन में अब एक फोन से समस्या का निराकरण हो रहा है। धरसींवा निवासी श्री कन्हैया लाल निषाद ने गांव में पानी सप्लाई नहीं होने को लेकर शिकायत की थी। उन्होंने बताया था कि नल जल योजना के तहत गांव में नई पानी टंकी का निर्माण करवाया गया है। जो कि पूर्ण भी हो गया है, लेकिन इसके बाद भी पानी की सप्लाई नहीं की जा रही है। इसको लेकर उन्होंने स्थानीय जनप्रतिनिधियों से भी शिकायत की थी, लेकिन इसके बाद भी किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गई। जिसके बाद उन्होंने कलेक्टोरेट के जन समस्या निवारण कॉल सेंटर में फोन किया।

मंत्रि-मंडलीय उप समिति की बैठक 30 को

रायपुर (विश्व परिवार)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री दयाल बघेल की अध्यक्षता में 30 सितम्बर को आगामी खरीफ विपणन वर्ष की धान खरीदी एवं कस्टम मिलिंग की नीति की समीक्षा कर सुझाव देने हेतु गठित मंत्रि-मंडलीय उप समिति की बैठक आगामी 30 सितम्बर को आयोजित की जा रही है। बैठक दोपहर 12 बजे से मंत्रालय महानदी भवन स्थित कक्ष क्रमांक एस-2-12 में होगी। मंत्री-मंडलीय उप समिति की बैठक में कृषि विकास एवं कृषक कल्याण मंत्री रामविचार नेताम, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा सहकारिता मंत्री केदार कश्यप, वित्त मंत्री ओ.पी. चौधरी, बी सूत्रीय कार्यान्वयन मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल और राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री टंकराम वर्मा सदस्य के रूप शामिल होंगे।

छत्तीसगढ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, रायपुर

// बिजली बंद की सूचना //

समस्त सम्मानीय उच्चदाब एवं निम्नदाब उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि खरोरा वितरण केन्द्र के अंतर्गत आने वाले उच्चदाब (33/11 के.व्ही.) विद्युत लाईन में दिपावली पूर्व आवश्यक सुधार कार्य एवं मरम्मत कार्य हेतु लाईन बंद होने निचे तालिका में दर्शित दिनॉक को सुबह 08.00 से दोपहर 02.00 बजे तक विद्युत प्रवाह बंद रहेगा, जिसके कारण फिडर से निकलने वाले समस्त दर्शित क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति अवरूद्ध रहेगी। आवश्यकतानुसार समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

क्र.	दिनांक	फीडर का नाम	प्रभावित क्षेत्र
1	05.10.2024	11 के.व्ही. बेल्दारसिवनी फीडर	केशला, शांतिनगर,
2	07.10.2024	11 के.व्ही. पचरी फीडर	नहरडीह, छड़िया, पचरी मंधईपुर व मोतिमपुरखुर्द
3	08.10.2024	11 के.व्ही. गंगोत्री फीडर	सिरी
4	09.10.2024	11 के.व्ही. टाऊन 1 फीडर	खरोरा, केशला
5	10.10.2024	11 के.व्ही. मोहरेंगा फीडर	गैतरा, चिचोली, गौरखेड़ा, मोहरेंगा,खौलीडबरी, भरुवाडीहकला व खुर्द पचदेवरी व परसवानी
6	11.10.2024	11 के.व्ही. बेल्दारसिवनी फीडर	वार्ड नं. 8 खरोरा, मांठ
7	12.10.2024	11 के.व्ही. पिकरीडीह फीडर	पिकरीडीह, मुड़पार, तिल्दाडीह, बिठीया व पाईटेक कॉलेज रायपुर रोड़
8	04.10.2024	11 के.व्ही. टाऊन 2 फीडर	खरोरा, केशला
9	15.10.2024	11 के.व्ही. मुरा केशर फीडर	मुरा क्रेशर
10	16.10.2024	11 के.व्ही. बुडेनी फीडर	बुड़नी, सोनमटठा, तुलसी,
11	17.10.2024	11 के.व्ही. अटल ज्योति पचरी	पम्प फीडर
12	18.10.2024	11 के.व्ही. अटल ज्योति कनकी	पम्प फीडर
13	19.10.2024	11 के.व्ही. मुरा पम्प फीडर	पम्प फीडर
14.	21.10.2024	11 के.व्ही. मोहरेंगा पम्प फीडर	पम्प फीडर

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ
विद्युत संबंधित शिकायतें केन्द्रीकृत कॉल सेन्टर के फोन नं. 1912 पर दर्ज कराएँ।

असुविधा के लिए खेद है

कार्यपालन यंत्री (संचा0 / संधा0)
संभाग छ0स्टे0 पॉ0डि0कं0 लि0, रायपुर

" विद्युत चोरी एक दण्डनीय अपराध हैं कृपया इससे बचे स्वहित एवं राष्ट्र हित में उर्जा बचाइए"

SAMVAD- 41557/ 1

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./14787/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 25-09-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14787
वार्ड का नाम- 13-राजीव गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 13 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR223I00009** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **TILAK DHRUW** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LAXMAN DHRUW** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री संजय ध्रुव** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - श्री तेजराम ध्रुव** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./14750/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 25-09-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14750
वार्ड का नाम- 28- शहीद हमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR223M00060** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. K. B. BABU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **K.B. SHWAMI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती रजनी रंगा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति- श्री संदीप रंगा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर
(छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कॉलोनी खिलोरा, जिला-रायपुर में निर्मित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **एल.आई.जी. भवन क्रमांक -174 श्री सुमित अग्रवाल पिता श्री प्रदीप अग्रवाल निवासी: सी-501, सांई राज रिजेंसी, सांई पेट्रोल पंप, पिंपले सौदागर, पुणे (महाराष्ट्र)**, को इस कार्यालय के आंबटन आदेश क्रमांक 790 दिनांक 27.01.2009 के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आंवटित किया गया है। **मूल आंबटी श्री सुमित अग्रवाल पिता श्री प्रदीप अग्रवाल** पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 03.11.2011 को लीजडीड निष्पादित करा लिया गया है। **मूल आंबटी के द्वारा नियुक्त (आम मुख्त्यार) श्री प्रदीप अग्रवाल पिता स्व. श्री भगवान दास अग्रवाल निवासी: एम.आई.जी-07, मोती नगर, बोरिया रोड़ एम.बी.आटा चक्की के पास रायपुर तह व जिला-रायपुर (छ.ग.)** द्वारा हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त फ्लैट को **क्रेता श्रीमती भुनेश्वरी साहू पति श्री राकेश कुमार साहू पता:- वार्ड नं.-18, रावनभाठा, सिवनी तहसील-अभनपुर जिला-रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में दिनांक 11.09.2024 को विक्रय कर दिया गया है। **वर्तमान में क्रेता श्रीमती भुनेश्वरी साहू पति श्री राकेश कुमार साहू**, द्वारा उक्त फ्लैट को फ्री-होल्ड पश्चात् अपने नाम पर नाम दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन/फ्लैट का फ्री-होल्ड उपरांत नाम दर्ज किये जाने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर
प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि इस कार्यालय के पत्र क्रमांक-1592 दिनांक 09.03.2012 के द्वारा नवा रायपुर अटल नगर सेक्टर-29, में स्वतंत्र भवन क्रमांक-एच.आई.जी-I/324, को **एम./एस. स्पार्क एडवायजरी सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड, डारेक्टर श्री प्रदीप कपूर पिता श्री गोपाल कृष्ण कपूर एवं श्रीमती सुनीता कपूर पिता श्री नरेन्द्र कुमार खत्री, निवासी: 23, गणेश चन्द्र अवेन्यू, तृतीय तल, कोलकाता, पिन नं. 700013**, के नाम स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा पंजीयन कार्यालय रायपुर से **दिनांक 22.08.2024** को लीजडीड (पट्टा विलेख) का निष्पादन करा लिया गया है। पूर्ण राशि जमा कर भवन का आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में **श्री प्रदीप कपूर एवं श्रीमती सुनीता कपूर ने श्री पीयूष मेहरोत्रा पिता स्व.श्री नरेन्द्र कुमार मेहरोत्रा, निवासी:-जी ए-2 आर/9/4, पुर्वाचल, हाउसिंग स्टेट, सेक्टर-3, बिधाननगर, 24, परगनस (नार्थ)** को आम मुख्तयार नियुक्त किया गया है, **मुख्तयार द्वारा उक्त भवन को क्रेता श्रीमती प्रियदर्शिनी मेहेर पति श्री नारायण मेहेर, निवासी:- बेलपड़ा, खलीपथर, बलॉंगिर, उड़ीसा, पिन नं. 767026**, को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी) प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः नवा रायपुर अटल नगर सेक्टर-29, में स्थित स्वतंत्र भवन क्रमांक- एच.आई.जी-I/324, के विक्रय के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अद्योहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /14751/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 25-09-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14751
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801N0667G** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SUKHDEV SINGH, KARAM SINGH SANDHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KARAM SINGH SANDHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MADHURI BAI UPADHYAY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PARMANAND UPADHYAY** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हलदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /14766/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 25-09-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14766
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802G01234** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BASUDEV MAL MITTAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NARAYAN MAL MITTAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GEETA MOTWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. PRAKASH MOTWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हलदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /14788/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 25-09-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14788
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802H00372** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ANIL KUMAR AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **A.K. AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KIRAN DEVI MISHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANDEEP KUMAR MISHRA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हलदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./14457/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 23-09-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14457
वार्ड का नाम-29 - गुरू गोविंद सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-29 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR334E00564** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. CHANDRAKANTA SHARMA** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O R.N. SHARMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **मोहम्मद अल्ताफ हुसैन** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - मोहम्मद सईद अहमद** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा वीर सावरकर नगर हीरापुर कॉलोनी, रायपुर में निर्मित EWS भवन योजना निर्मित दुकानों/भूखण्डों/भवनों में से भूखण्ड/भवन क्रमांक EWS - 677 **श्री गुरूनाम सिंह पन्नू पिता श्री प्यारा सिंह** भाड़ाक्रय / पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 09/06/2009 को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के दान हेतु दिनांक 13/09/2029 को निष्पादित दान इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री / श्रीमती हरप्रीत कौर पिता / पति श्री गुरूनाम सिंह पन्नू** के नाम से दान करने के लिए दान अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड / भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जायेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा टाटीबंध कॉलोनी, रायपुर में निर्मित एल. आई. सी. भूखण्ड/ भवन योजना के अंतर्गत दुकानों/भूखण्डों/भवनों में से भूखण्ड/भवन क्रमांक **एलआईजी - II / 865 - श्री संदीप सोनी पिता श्री के. पी. सोनी भाड़ाक्रय** / पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 16/02/2006 को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक 14/07/2024 को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री / श्रीमती प्रेमलता गुप्ता पति श्री राम अवतार गुप्ता** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड / भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जायेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 26 सितंबर 2024

संभागीय अग्रवाल सभा की बैठक संपन्न समाज हित में कई लिए गए निर्णय

सम्भागीय भवन प्रथम तल निर्माण के लिए विनोद अग्रवाल ने 70 लाख देने कि घोषणा की

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-संभागीय अग्रवाल सभा की बैठक अग्रवाल सभा बिश्रामपुर की मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुई।

उक्त बैठक की शुरुवात महाराजाधिराज अग्रसेन जी महाराजा अग्रसेन जी के छाया चित्र पर माल्यार्पण एवम दीप प्रज्वलित कर हुई।बैठक में उपस्थित संभागीय अग्रवाल महा सभा के अध्यक्ष श्री निवास केडिया,पूर्व अध्यक्ष चरण सिंह अग्रवाल , कश्मीरी लाल ,गौरी शंकर अग्रवाल ,बिश्म्बर अग्रवाल कुनकुरी,पवन् अग्रवाल पत्थलगावं, सुभाष गोयल , विनोद अग्रवाल हनुमान राइस मिल, खजान चंद जिंदल मंचासिन अतिथियों का एवम संभाग की 27 सभाओं से आए अग्रवाल सभा के अध्यक्ष,सचिव, एवं वरिष्ठ अग्र बंधुओ का मल्यापर्ण कर स्वागत किया गया।

बिश्रामपुर अग्रवाल अग्रवाल सभा के उपाध्यक्ष ललित गोयल के द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया सभा 27 सभाओं के अथितियो का स्वागत ललित गोयल, राजू अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, बाबूलाल दनोदिया, के के सिंघल, मोहन लाल अग्रवाल, श्यामा गोयल,जय भगवान गर्ग , आदि ने किया ,मंच का कुशल संचालन मुकेश गर्ग ने किया। संभागीय अग्रवाल महा सभा की बैठक बिश्रामपुर अग्रवाल सभा को दिए जाने पर संभागीय अग्रवाल को साधुवाद दिया ओर कहा की आज हम बिश्रामपुर अग्रवाल सभा के लोग अपने आप मे बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहे है आज संभाग के 5 जिलों के 27 अग्रवाल सभा के लोगो का आगमन हमारे बिश्रामपुर के अग्रसेन भवन् मे हहुआ है ,

संभागीय सभा के अध्यक्ष श्रीनिवास केडिया ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संभागीय भवन निर्माण की प्रक्रिया व प्रगति के बारे में जानकारी दी तथा संभागीय भवन यथाशीघ्र पूरा कर भवन का उद्घाटन करने का संकल्प लिया।

सभा के संरक्षक संस्थापक चरण सिंह अग्रवाल जी द्वारा संभागीय सभा की स्थापना और 10 वर्षों के सफर पर प्रकाश डाला। सभा के संरक्षक और वरिस्तम सदस्य विसंभर अग्रवाल कुनकुरी के द्वारा संभागीय कार्यकारिणी के कार्यकाल 2 साल के स्थान पर साढ़े तीन साल होने की बात रखते हुए शीघ्र चुनाव कराने की मांग की। संरक्षक पवन अग्रवाल द्वारा सभा के संविधान का सम्मान व पालन करने ओर शीघ्र चुनाव तिथि घोषित करने की बात कही।

उपाध्यश विकास अग्रवाल द्वारा वर्तमान कार्यकारिणी को कोर्ट में चुनौती देने के दिन को काला दिवस के रूप में घोषित करने की बात की और चुनाव प्रक्रिया के तहत सभा से संलग्न अग्रवाल सभाओ के सदयता शुल्क के भुगतान की जानकारी देते हुए यथा शीघ्र मतदाता सूची तैयार करने तथा चुनाव तिथी घोषित करने की बात कही। संभागीय भवन निर्माण में मुख्य सहयोगी विनोद अग्रवाल के द्वारा संभागीय भवन का प्रथम तल्ल की लागत राशि 70 लाख का सहयोग देने पर सभा उनका शॉल श्रीफल से सम्मानित किया ।अपने उदबोधन में विनोद अग्रवाल ने कहा की इंसान का मन बड़ा होना चाहिए उन्होंने संभाग की समस्त 27 सभाओं मे जहा भवन नही है वहा भवन निर्माण शुरू करने पर यथा संभव सहयोग देने की बात कही।

अधिवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल के अनुरोध पर बैठक में शामिल 27 सभाओं के प्रतिनिधियों को अपने विचार रखने का अवसर दिया गया जिसमे अंबिकापुर ,सीतापुर सूरजपुर, भैयाथान ,कुनकुरी, पत्थलगांव ,बैकुंठपुर ,प्रतापपुर, लखनपुर, चिरमरी व अन्य सभा से पधारे प्रतिनिधियों ने खुल कर अपने विचार रखे और कहा कि समाज की बैठक है समाज हित में चर्चा होनी चाहिए आपस में एकता होनी चाहिए सभी सभाओं से एक एक प्रतिनिधि सभ कार्यकारिणी मे होना चाहिए।

सभा में लखनपुर के प्रतिष्ठित नागरिक तथा सभा के सम्मानित सदस्य प्रेमचंद्र अग्रवाल के स्वर्गवास होने पर दो मिनट का मौन रख कर उनको श्रद्धाजली दी गईअंत में सभा के सचिव राधा कृष्ण जिंदल द्वार आभार प्रदर्शित किया गया। चर्चा के दौरान अंबिकापुर अग्रवाल सभा से कन्हैया अग्रवाल के द्वारा संभागीय सभा का चुनाव शीघ्र कराने एवम आज की बैठक मे ही चुनाव तिथि घोषित करने की मांग को लेकर विवाद की स्थिति निर्मित हुई जिसको वरिष्ठजनों ने समझा बुझा कर वातावरण को शांत किया।

बैठक का संचालन मुकेश गर्ग सूरजपुर द्वारा किया गया व बैठक संचालन में सहयोग भैयाथान सभा के संयोजक गोपाल कृष्ण अग्रवाल द्वारा दिया गया।

संक्षिप्त समाचार

नियमित कर्मचारीयो को एक लाख एवम ठेका मजदूरों को 25 हज़ार सालना बोनस दिया जाय- अजय विश्वकर्मा

सुरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-सालना बोनस राशि तय करने 29 सितम्बर को होने वाली मानकीकरण की बैठक में नियमित कर्मचारियों को 1 लाख से ऊपर तथा ठेका श्रमिकों को भी दुर्गा पूजा के पूर्व 25 हजार बोनस का भुगतान हो । उक्त मांग संयुक्त कोयला मजदूर संघ (एटक) के अध्यक्ष अजय विश्वकर्मा ने कोल इंडिया के चेयरमेन सहित मानकीकरण की बैठक में शामिल होने वाले सभी श्रमिक प्रतिनिधियों से अपील किया है ।कोल इंडिया के उत्पादन में 60 से 70 प्रतिशत भागीदारी ठेका मजदूरों की होती है।देश के उन्नति में ठेका मजदूरो की अहम् भूमिका होने के बावजूद ठेका मजदूर तीज त्यौहार का उत्सव मानाने से वंचित रहता है।कोल इंडिया कोयला साल दर साल कोयला उत्पादन में रिकॉर्ड उत्पादन के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका में भी अग्रणी है इसके लिए कोल इंडिया परिवार बधाई के पात्र है। कामरेड अजय विश्वकर्मा ने मांग किया कि कोल इंडिया के नियमित कर्मचारियो कम से कम 1 लाख से ऊपर तथा ठेका मजदूरो को 25 हजार तक बोनस का भुगतान हो।

कच्ची महुआ शराब के साथ एक गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी (भापुसे), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यू0बी0एस0 चौहान (रा0पु0से0) एवं नगर पुलिस अधीक्षक कोरबा भूषण एक्का (रा0पु0 से0) के दौरान कानून व्यवस्था मजबूत करते हुए अवैध शराब ब्रिकी करने वाले एवं असामाजिक तत्वों के विरूद्ध प्रभावी वैधानिक कार्यवाही करने हेतु जिले के समस्त पुलिस अधिकारीयो को निर्देशित किया गया है। उक्त निर्देश के पालन में क्षेत्र में मुखबीर को सक्रिय किया गया, मुखबीर से प्राप्त सूचना के आधार पर दादरखुर्द कोरबा में संतोषी बाई अगरिया पति स्व0 तारासिंह उम्र 38 वर्ष सा0 दादरखुर्द चौकी मानिकपुर थाना कोतवाली जिला कोरबा के पास से 6 लीटर कच्ची महुआ शराब व बिक्री रकम 100 रूपये को जप्त किया गया है। आरोपी के विरूद्ध धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही की जाकर आरोपी को गिरफ्तार किया जाकर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है। उक्त कार्यवाही में निरीक्षक एम0बी0 पटेल थाना प्रभारी कोतवाली के कुशल मार्गदर्शन में चौकी प्रभारी नवीन पटेल के नेतृत्व में, मप्रआर0 स्मिता बेक, आर0 संजय रात्रे, प्रदीप राठौर, गंगा राम डांडे एवं अन्य स्टाफ के द्वारा की गयी कार्यवाही ।

आराम करते हाथियों का फोटो हो रहा वायरल

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले के कटघोरा वन मंडल अंतर्गत लेमरू जंगल में हाथियों का एक झुंड आराम करते हुए ड्रोन कैमरे में कैद हुआ हैं । यह छायाचित्र और इसका वीडियो वन आरक्षक अशोक श्रीवास ने चोटिया बीट में लिया हैं। वन विभाग के अनुसार, कटघोरा वन मंडल में 7 वन परिक्षेत्र हैं, जिनमें से 4 परिक्षेत्रों केंदई, पसान, ऐतमा नगर और जटगा में पिछले 4 सालों से 48 हाथी रहते हैं। वायरल छायाचित्र और वीडियो में हाथी शांति से आराम करते और विचरण करते दिखाई दे रहे हैं। वन विभाग ने बताया कि हाथियों की गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जा रही है और आसपास के क्षेत्रों में मुनादी कराई जा रही है ताकि ग्रामीण जंगल की ओर न जाएं और हाथी उग्र न हों।

पिस्टल के साथ एक गिरफ्तार

जांजगीर(विश्व परिवार)। मुखबीर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति कृष्णा बीकानेर स्वीट्स के पास अवैध रूप से पिस्टल रखा हुआ है। आरोपी के कब्जे से अवैध पिस्टल, मैगजिन एवं 15 नग राउण्ड बरामद किया गया हैं। आप को बता दे की आरोपी करम सिंह कोरबा जिला के निवासी हैं। पुलिस द्वारा आरोपी के विरूद्ध धारा 25 आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई करते हुए न्यायिक रिमाण्ड में भेज दिया गया हैं।

चोरी का आरोपी गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। लैंगी में रहने वाले अमृत लाल के मकान में आलमारी तोडकर 56 हजार रुपए नगद और सोने-चांदी की जेवरात चोरी करने के आरोप में एक ग्रामीण को पुलिस ने गिरफ्तार किया हैं। मामले की जांच की जा रही है। जानकारी के अनुसार पसान थानांतर्गत ग्राम लैंगी में रहने वाले अमृत लाल के मकान में ताला लगा हुआ था। परिवार के सदस्य किसी निजी कार्य से बाहर गए थे। इसी बीच दोपहर लगभग 3 बजे ग्राम मातिन लोड़ीबहरा निवासी अमृतलाल के घर पहुंचा।

डी ए वी. बिश्रामपुर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिवस मनाया गया

सुरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल विश्रामपुर में विद्यालय प्राचार्य एच. के. पाठक के कुशल मार्गदर्शन एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एल. आर. साहू व वरिष्ठ क्रीड़ा शिक्षक पी. के. वैद्य के नेतृत्व में 24 सितंबर 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई विश्रामपुर के द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर व्याख्यानमाला आयोजित कर दिवस विशेष का महत्त्व एवं उद्देश्य बता कर स्वच्छ वातावरण निर्माण के प्रति जागरूक किया गया।

विद्यालय प्राचार्य एच. के. पाठक ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में समस्त स्वयंसेवकों एवं विद्यालय परिवार को राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि 24 सितंबर 1969 को स्थापित राष्ट्रीय सेवा योजना, स्थापना काल से अद्यतन समाज सेवा एवं राष्ट्रोत्थान के कार्यों में सतत् महती भूमिका निभा रही है । देश के युवाओं में सामाजिक एवं राष्ट्रोपयोगी कार्यों के प्रति दायित्व बोध जागृत कर उनमें उत्साह एवं नवीन ऊर्जा का संचार कर रही है। साक्षरता, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण जागरूकता, प्रदूषण नियंत्रण आदि उद्देश्यों की प्राप्ति में राष्ट्रीय सेवा योजना अग्रणी रही है। वरिष्ठ क्रीड़ा शिक्षक श्री पी के वैद्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि 24 सितंबर सभी स्वयंसेवकों के लिए समाज एवं राष्ट्रहित के खातिर अपनी संपूर्ण सेवा देने और सामाजिक कार्य करने का दिन है। उन्होंने स्वच्छता का महत्त्व बताते हुए अपने आस - पास के वातावरण को हमेशा स्वच्छ बनाए रखने के लिए प्रेरित किया । हम सभी समाज एवं देश हित के कार्यों में अपने आप को सदैव तत्पर रखें, तभी इस दिवस की सार्थकता सिद्ध होगी। आयोजन को सफल बनाने में रा.से.यो. समिति के सदस्यों , कार्यालय स्टाफ सहित समस्त स्वयंसेवकों का सराहनीय योगदान रहा।

प्रधान जिला न्यायाधीश जितेन्द्र कुमार जैन ने उप जेल सारंगढ़ का किया निरीक्षण

रायगढ़(विश्व परिवार)। जितेन्द्र कुमार जैन प्रधान जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रायगढ़ द्वारा 24 सितम्बर 2024 को उप जेल सारंगढ़ जिला का भ्रमण किया गया। जहां उप जेल के पुरूष एवं महिला बैरक का निरीक्षण कर विधिक सहायता शिविर का भी आयोजन किया गया। प्रधान जिला न्यायाधीश द्वारा बंदियों से मिलकर उनके मामलों के संबंध में पूछताछ की गई तथा विधिक साक्षरता शिविर में नालसा द्वारा समय-समय पर पात्र बंदियों की रिहाई हेतु चलाये जा रहे अभियान के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। उप जेल सारंगढ़ में स्थापित लीगल एड क्लिनिक के माध्यम से बंदियों को उनके मामले में विधिक सहायता एवं सलाह उपलब्ध कराए जाने, जिसमें पैनल अधिवक्ता/प्रतिधारक अधिवक्ता द्वारा मामले में पैरवी करने तथा जमानत आदि की कार्यवाही करने एवं छोटे अपराधों में निरूद्ध ऐसे बंदी, जो लंबे समय से जेल में है उन्हे जेल लोक अदालत में अपराध स्वीकारोक्ति के आधार पर रिहा हो सकने की जानकारी दी गई। निरीक्षण में बंदियों को मिलने वाली चिकित्सा सुविधा एवं चिकित्सा की उपलब्धता के संबंध में जानकारी ली गई तथा बंदियों से उनके स्वास्थ्य के संबंध में पूछताछ की गई। इसके अतिरिक्त बंदियों को मिलने वाली सुविधाओं के अंतर्गत भोजन, पेयजल, शौचालय, मनोरंजन एवं शिक्षा की जानकारी ली गई। साथ ही बंदियों के लिए वीडियो कान्फ्रेन्सिग के माध्यम से मुलाकात करने एवं न्यायालय पेशी मे उपस्थित होने के संबंध में समीक्षा की गई। उक्त शिविर में कुमारी पारूल श्रीवास्तव, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, सारंगढ़-बिलाईगढ़, सचिव श्रीमती अंकिता मुदलियार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रायगढ़, उप जेल के अधिकारी एवं कर्मचारी तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कर्मचारी एवं पैरालीगल वालिंटियर उपस्थित रहे।

बाबाधाम परिसर में की गई साफ-सफाई

स्वच्छता ही सेवा के माध्यम से जिले के धार्मिक, पर्यटन स्थलों में किया जा रहा है सफाई कार्य

रायगढ(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल के निर्देशन में जिले में स्वच्छता ही सेवा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत जितेन्द्र यादव के उपस्थिति में कोसमनारा स्थित बाबाधाम परिसर में सफाई कार्य करते हुए स्वच्छता ही सेवा का संदेश दिया गया। जिला पंचायत, जनपद पंचायत के कर्मचारी, सचिव, रोजगार सहायक, महिला स्व-सहायता समूह के सदस्य एवं स्वेच्छाग्राही सहित लगभग 150 लोगों के द्वारा आज सुबह बाबाधाम मंदिर एवं परिसर में साफसफाई किया गया। इस दौरान रैली निकालते हुए स्वच्छता का शपथ भी दिलाया गया। उल्लेखनीय है कि जिले में स्वच्छता ही सेवा 2024 का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत जिले के सभी जनपद पंचायत के सभी ग्राम पंचायत स्तर पर श्रमदान के माध्यम से मंदिर, धार्मिक स्थल एवं पर्यटन स्थलों में साफ -सफाई किया जा रहा है। इसके साथ ही जनसामान्य को जागरूक करने हेतु महिला समूह एवं ग्रामवासियों द्वारा जागरूकता रैली भी निकाली गई। इस दौरान मंदिर परिसर में स्थित दुकानदारों एवं समिति को कुड़ेदान के उपयोग के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी स्वच्छता ही सेवा श्री महेश पटेल, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री नीलाराम पटेल, सीईओ जनपद रायगढ़ भाग्यश्री मिश्रा, एडिशनल सीईओ जनपद रायगढ़ श्री सनत नायक सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर विनय कुमार ने की जिले में कानून व्यवस्था की समीक्षा

नशीली पदार्थों के तस्करी पर सख्त कार्रवाई के निर्देश

महासमुंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने आज समय सीमा की बैठक के पूर्व जिले में कानून व्यवस्था की समीक्षा की। इस दौरान राजस्व एवं पुलिस विभाग के अधिकारी मौजूद थे। कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने कहा कि जिले में कानून व्यवस्था की अप्रिय स्थिति को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और कानून के तहत कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने कहा कि आगामी त्यौहारी सीजन में मीना बाजार समेत अन्य प्रदर्शनी बाजारों को लगाने के पूर्व लिखित में सूचना दें और अनुविभागीय अधिकारी सुरक्षा के सभी मापदण्डों को परखते हुए अनुमति प्रदान करें। उन्होंने कहा कि मीना बाजार में मौत कुंआ जैसे गतिविधियों के लिए अनुमति न देवें। उन्होंने जिला परिवहन अधिकारी को गाड़ियों में ओवर लोडिंग के लिए कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सामान्यत: ग्रामीण इलाकों से मालवाहक वाहनों में ओवरलोड भरकर सफर करते हैं उन्हें समझाईश देते हुए उन पर कार्रवाई करें। साथ ही कहा कि प्राइवेट स्कूल बसों में भी सेफ्टी ऑडिट सुनिश्चित करें। मुसाफिर पंजी बनाकर एक कॉपी थाने में जमा करें। उन्होंने कहा कि समय-समय पर गठित शांति समिति की बैठक आयोजित करते रहें। ताकि जिले में धार्मिक सद्भाव कायम हो। श्री लंगेह ने कहा कि ठेला, गुमटी और दुकानदार निर्धारित सीमा पर ही अपने दुकान लगाएं। सड़क के उपर सामान रखने पर कार्रवाई की जाएगी। नगरपालिका को इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने ऐसे स्थानों का चिन्हांकन करने कहा है जहां एप्रोच रोड में दुर्घटना की सम्भावना बनी रहती है।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भटगांव का निरीक्षण लिया कलेक्टर ने

सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता करने, सीसीटीवी इंस्टॉल कराने के दिये दिशा निर्देश

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार) सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भटगांव पहुँचे कलेक्टर श्री रोहित व्यास, जहां उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र का बारीकी से निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बीएमओ को स्वास्थ्य केन्द्र की बिल्डिंग के अंदर और बाहर, चारों तरफ सीसीटीवी इंस्टॉल करवाने के निर्देश दिए ताकि अस्पताल की सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित किया जा सके।

उन्होंने पैथोलॉजी लैब में होने वाले जाँच के सम्बंध में जानकारी ली, स्वास्थ्य सेवा का लाभ लेने के लिये केंद्र आने वाले मरीज़ों के सभी टेस्ट यहीं सुनिश्चित हों इसके लिए उन्होंने आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसके साथ ही एम एल टी से रिकॉर्ड संधारण को लेकर व टेस्ट से सम्बंधित और बीएमओ से आईपीडी तथा ओपीडी इत्यादि के बारे में जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने अस्पताल के प्रबंधन को दुरुस्त करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए तथा सफाई व्यवस्था पर विशेष फोकस करने की बात कही।

मेडिसन काउन्टर में अवलोकन के दौरान स्टॉक नियमित उपलब्ध रहे इसके लिए मॉनीटरिंग की बात कही। इसके साथ ही मौसमी बीमारियों से संबंधित सभी स्टॉक उपलब्ध रखने के लिए किया निर्देशित।

इस अवसर पर सीएचओ, सेक्टर सुपरवाइजर, सेक्टर मेडिकल ऑफिसर की बैठक भी ली गई। जिसमें कलेक्टर द्वारा प्रथम तिमाही में गर्भवती महिलाओं के रजिस्ट्रेशन पर विशेष प्राथमिकता देने की बात कही गई। ताकि पहली तिमाही में गर्भावस्था के दौरान होने वाले जोखिम को नगण्य किया जा सके। इसके साथ ही बैठक में आयुष्मान कार्ड ,सिकल सेल, लैब टेस्टिंग, टेली मेडिसिन, टीकाकरण, स्क्रीनिंग इत्यादि पर प्रगति की जानकारी ली गई। दौरे में एसडीएम श्री सागर सिंह, जनपद सीईओ श्री नृपेंद्र सिंह व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

संपादकीय तिरुपति में प्रसादम से खिलवाड़ आस्था पर आघात

सड़क यात्रा जोखिम भरी, रोज 432 मौतें

भारत में औसतन हर घंटे 53 सड़क हादसे होते हैं और उनमें 18 लोगों की जान जाती है- यानी रोज 432 मौतें। कुल जितनी दुर्घटनाएं होती हैं, उनमें 45 प्रतिशत में दो पहिया वाहन शामिल रहते हैं। भारत में सड़क यात्रा जोखिम भरी है, यह कोई रहस्य नहीं है। हर साल आने वाले आंकड़े इस बारे में चिंता बढ़ाते हैं, लेकिन उन आंकड़ों की चर्चा थमते ही सब कुछ जैसे को तैसा चलता रहता है। इसलिए परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के इस बारे में चिंता जताने से भी सूरत बदलेगी, इसकी आशा शायद ही किसी को होगी। भारत की छवि आज यह है कि यहां ऑटो उद्योग का तेजी से विकास हुआ है, लेकिन साथ ही भारत उन देशों में बना हुआ है, जहां सड़क हादसों में सबसे ज्यादा मौतें होती है। गडकरी भारतीय ऑटोमोबिल निर्माता संघ के वार्षिक सम्मेलन में गए, तो वहां उन्होंने कंपनियों के कर्ता-धर्ताओं को अपनी चिंता बताई। जिक्र किया कि भारत में औसतन हर घंटे 53 सड़क हादसे होते हैं और 18 लोगों की जान जाती है- यानी रोज 432 मौतें। गडकरी ने बताया कि कुल जितनी दुर्घटनाएं होती हैं, उनमें 45 प्रतिशत में दो पहिया वाहन शामिल रहते हैं। उनके अलावा पैदल चलने वाले लोग लगभग 20 प्रतिशत दुर्घटनाओं के शिकार बनते हैं। यानी मौतों के मामले में देखें, तो निम्न मध्यम और निम्न आय वर्ग के लोग इनकी चपेट में ज्यादा आते हैं। उन मौतों के बाद पीड़ित परिवारों पर क्या गुजरती है, यह एक अलग दुखद दास्तां है। लेकिन समाधान क्या है? गडकरी ने कंपनी अधिकारियों से कहा कि उन्हें सुरक्षित ड्राइविंग सिखाने वाले स्कूल अधिक से अधिक संख्या में खोलने चाहिए। जाहिर है, यह एक सदिच्छा ही है। वैसे हादसों का एक बड़ा कारण सड़कों का असुरक्षित निर्माण भी है। स्पष्टत: इसकी जवाबदेही सरकार पर आती है। गडकरी ने कहा कि सड़कों की गुणवत्ता सुधारने के लिए सरकार पहल कर रही है। लेकिन वो पहल कम जमीन पर उतरेगी और कब उसके सकारात्मक लाभ दिखेंगे, इस बारे में परिवहन मंत्री चुप ही रहे। यही समस्या है। गंभीर मसलों के लिए दूसरों की जिम्मेदारी का जिक्र हमारी राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा बन चुका है। जब बात अपने दायित्व पर आती है, अक्सर अधिकारी सामान्य बातें कह कर निकल जाते हैं। जब तक इससे उबरा नहीं जाता, भारत की सड़कें इसी तरह जानलेवा बनी रहेंगी।

ललित गर्ग

प्रथम दृष्टया मंदिर प्रबंधन प्रसादम से खिलवाड़ का दोषी है। जो मंदिर प्रतिदिन तीन लाख लड्डू बेचकर सालाना 500 करोड़ रुपये तक लाभ कमाता है, वह क्या इतना सक्षम नहीं कि गुणवत्ता जांच के लिए एक किफायती प्रयोगशाला ही बना ले? लाखों-करोड़ों हिन्दू श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र तिरुमाला भगवान वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर में मिलने वाले लड्डू वाले प्रसाद में घी की जगह जानवरों की चर्बी और मछली के तेल का इस्तेमाल की शर्मनाक एवं लज्जाजनक घटना ने न केवल चौंकाया है बल्कि मन्दिर व्यवस्था पर सवाल खड़े किये हैं। यह मामला जितना सनसनीखेज है, उतना ही आस्था पर आघात करने वाला भी। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने पहले यह कहा कि तिरुपति मंदिर में मिलने वाले लड्डुओं को बनाने में ऐसी सामग्री का इस्तेमाल किया जाता था, जिसमें पशुओं की चर्बी मिली रहती थी, फिर उन्होंने गुजरात की एक सरकारी प्रयोगशाला से मिली रपट के आधार यह कहा कि लड्डुओं को बनाने में जिस घी का उपयोग होता था, उसमें सचमुच पशुओं की चर्बी, मछली के तेल आदि का प्रयोग होता था। यह घटना हिन्दू आस्था, पवित्रता एवं मन्दिर संस्कृति को धुंधलाने की कुचेष्टा एवं एक विडम्बनापूर्ण त्रासदी है। अगर प्रसाद के मिलावटी एवं अपवित्र होने की बात सही है तो इससे अधिक आघातकारी, अनैतिक एवं अधार्मिक और कुछ हो ही नहीं सकता। चौंकाने वाली बात यह है कि प्रसाद के तौर इन लड्डुओं का वितरण न केवल श्रद्धालुओं के बीच किया गया, बल्कि भगवान को भी भोग के तौर पर यही लड्डू चढ़ाया जाता था। अब इस मामले में केंद्र सरकार एवं प्रांत सरकार के दखल देने मात्र से संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता क्योंकि हिंदुओं की आस्था से खिलवाड़ करने वाला यह प्रकरण अक्षम्य अपराध है, जिसकी गहन जांच होनी ही चाहिए, ताकि ऐसे जघन्य कृत्य अन्य मन्दिरों की अस्मिता के धुंधलाने के कारण न बने। प्रथम दृष्टया मंदिर प्रबंधन प्रसादम से खिलवाड़ का दोषी है। जो मंदिर प्रतिदिन तीन लाख लड्डू बेचकर सालाना 500 करोड़ रुपये तक लाभ कमाता है, वह क्या इतना सक्षम नहीं कि गुणवत्ता जांच के लिए एक किफायती प्रयोगशाला ही बना ले? मंदिर प्रबंधन के पास न तो अपनी जांच सुविधाएं हैं और न वह जांच कराने का इच्छुक था? देश के संपन्नतम

मंदिरों में शुमार यह तीर्थ अगर गुणवत्ता, आस्था एवं पवित्रता से समझौता कर रहा है, तो देश के बाकी मंदिरों में क्या हो रहा होगा, सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। मन्दिरों एवं आस्थास्थलों पर दिनोंदिन बढ़ रही श्रद्धालुओं की आस्था एवं भीड़ से आर्थिक लाभ कमाने की मानसिकता न केवल घिनौनी है बल्कि शर्मनाक भी है। मंदिर तो भगवान भरोसे चल रहे हैं, पर मन्दिर-प्रबंधन स्वयं को अर्थपति बनाने में जुटा है, यही कारण है कि मन्दिर को धंधा बना दिया गया है, ऐसे मन्दिर प्रबंधकों, पूजारियों एवं पदाधिकारियों की श्रद्धा न तो भगवान के प्रति है और न भक्तों के प्रति। वे तमाम मंदिर, जो अपने यहां से प्रसाद वितरित करते हैं या बेचते हैं, उन सभी को गुणवत्ता, शुद्धता एवं पवित्रता जांच की व्यवस्था जरूर करनी चाहिए। एक बड़ा सवाल यह है कि ये कौन लोग हैं, जिन्हें पवित्रता एवं जन-आस्था की परवाह नहीं है। मंदिर ट्रस्ट ने प्रसादम से खिलवाड़ और मिलावट की पुष्टि की है। देश के एक पवित्रम श्रद्धा केंद्र तिरुपति मंदिर का प्रबंधन करने वाली संस्था तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम ने कहा है कि घी के आपूर्तिकर्ताओं ने मंदिर में गुणवत्ता जांच की सुविधा न होने का फायदा उठाया है। अब सवाल उठता है कि मंदिर प्रबंधन की सफाई या स्वीकारोक्ति को कितनी गंभीरता से लिया जाए? क्या मंदिर प्रबंधन को अपराध की गंभीरता का अंदाजा है? क्या मंदिर प्रबंधन को मंदिर की पवित्रता का अनुमान है? देश एवं दुनिया के सबसे चर्चित आस्थास्थल से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफसख्त कार्रवाई जरूरी है। यह अफसोस की बात है कि मंदिरों में बाहर से चढ़ने वाला प्रसाद तो पहले से ही संदेह के दायरे में रहता है, पर अगर मंदिर की अपनी रसोई में तैयार होने वाले प्रसाद की भी विश्वसनीयता आहत हुई है, तो यकीन मानिए, इंसान फिर किन पर भरोसा करेगा? क्योंकि व्यापार में मिलावट तो चल ही रही है, अब मन्दिरों में यानी भगवान के दरबार में मिलावट से मनुष्यता गहरे रसातल में चली गयी है। मूल्यहीनता एवं अनैतिकता की यह चरम पराकाष्ठा है। गुणवत्ता एवं पवित्रता सुनिश्चित करने वाले अधिकारियों के लिए यह एक गंभीर चुनौती है और इस चुनौती को स्वीकार करते हुए युद्ध स्तर पर काम करने की आवश्यकता है। इस खुलासे के बाद लोग अपना गुस्सा एवं आक्रोश भी जाहिर कर रहे हैं। कुछ ऐसा ही 1984 में भी हुआ था जब डालडा में चर्बी मिले होने का मामला सामने आया था, लेकिन वह व्यापार का मामला था, लेकिन तिरुपति प्रसादम में मिलावट का मामला आस्था का है। भूल, अपराध एवं लापरवाही की नब्ज को ठीक-ठीक समझना जरूरी है। भूल सही जा सकती है, लेकिन लापरवाही एवं आपराधिक सोच को सहन नहीं किया जा सकता। दरवाजे पर बैठा पहरेदार भीतर-बाहर आने-जाने वाले लोगों को पहचानने में भूल कर सकता है मगर सपने नहीं देख सकता। लापरवाही एवं अपराधिक मानसिकता विश्वसनीयता एवं पवित्रता को तार-तार कर देती है। बुराइयां जब भी मन पर हावी होती हैं, गलत रास्ते खुलते चले जाते हैं। मन्दिरों पर बुराइयां हावी होना चिन्ताजनक ही नहीं, गंभीर खतरों के संकेत हैं। मन्दिर प्रबंधन को अधिक चुस्त-दुरस्त, पारदर्शी एवं नैतिक बनाने की भी जरूरत है। प्रश्न है कि हिन्दू मन्दिरों में ही ऐसे मामले क्यों सामने आते हैं, क्या मन्दिर प्रबंधन अन्य समुदायों के मन्दिरों या धार्मिक-स्थलों की तरह पवित्र, गुणवत्ता पूर्ण, उच्च चारित्रिक एवं नैतिक देखभाल नहीं कर सकते?यह मंदिर भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है, जिसे तिरुपति बालाजी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। मान्यता है कि भगवान वेंकटेश्वर ने लोगों को कलियुग के कष्टों और परेशानियों से बचाने के लिए अवतार लिया था। यहां बालों का दान किया जाता है। मान्यता है कि जो व्यक्ति अपने मन से सभी पाप और बुराइयों को यहां छोड़ जाता है, उसके सभी दु:ख देवी लक्ष्मी खत्म कर देती हैं। लेकिन मन्दिर प्रबंधकों एवं प्रसाद निर्माताओं के पापों का क्या हो? बहरहाल, तिरुपति में लड्डुओं का वितरण तत्काल प्रभाव से रोक दिया गया है। अशुद्ध मिलावटी आपूर्ति के लिए जिम्मेदार ठेकेदार को काली सूची में डालना और उस पर जुर्माना लगाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसे कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। मिलावट विरोधी कानूनों के सबसे कड़े प्रावधान उस पर लागू होने चाहिए और सजा ऐसी मिलनी चाहिए कि मिसाल बन जाए। यह कार्य स्वयं मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू को सुनिश्चित करना चाहिए। ऐसे संवेदनशील मामलों में राजनीति तो कत्तई नहीं होनी चाहिए, आरोप-प्रत्यारोप से भी बचा जाना चाहिए। भावनाओं से खेलने के बजाय शासकों को शासन-प्रशासन के जरिये सुनिश्चित करना होगा कि शुद्धता-गुणवत्ता केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि तमाम जगहों और उत्पादों में बहाल रहे। दिव्य मंदिर तिरुमाला की पवित्रता और करोड़ों हिंदुओं की आस्था को नुकसान पहुंचाकर बहुत बड़ा पाप किया गया है। मन्दिर-व्यवस्थाएं मूल्यहीन और दिशाहीन हो रही है, उनकी सोच जड़ हो रही है। मिलावट, अनैतिकता, अपवित्रता और अविश्वास के चक्रव्यूह में मन्दिर मानो कैद हो गये है। यह तो दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण है कि प्रसादम के साथ भी खिलवाड़ हो रहा है, सामान्य जन-जीवन में दूध, घी, मसाले, अनाज, दवाइयां तथा अन्य रोजमर्रा के उपयोग एवं जीवन निर्वाह की शुद्ध वस्तुएं किसी भाग्यशाली को ही मिलती होंगी। भारत के लोगों को न शुद्ध हवा मिल रही है और न शुद्ध पानी और न ही शुद्ध खाने का निवाला, कैसी अराजक शासन व्यवस्था है? इस भ्रष्ट एवं अनैतिकता की आंधी मन्दिरों तक पहुंच गयी है।

आलेख

जीरो गार्बेज एरिया के साथ स्वच्छता के नए आयाम को छूता अंबिकापुर

-श्रीमती मृणमई पांडे, अंबिकापुर

वर्ष 2014 में अम्बिकापुर की महिला समूहों के माध्यम से डोर टू डोर कचरा कलेक्शन और कचरे के सेग्रीगेशन की योजना जब शुरू की गई थी तब किसी ने भी सोचा नहीं था कि एक छोटा सा दिखने वाला यह मॉडल जिले और प्रदेश का इतना मान बढ़ाएगा कि इस योजना की धूम विदेश तक पहुंचेगी । यह वह योजना है जिसने अम्बिकापुर शहर को लगातार पांच बार सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार दिलाया है । यह सब संभव हो पाया सिर्फ महिला समूहों की दिन रात की मेहनत और मॉडल के सफल क्रियान्वयन से । इस मॉडल को सफल बनाने में स्वच्छता दीदियों ने अपना बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान निभाया । घर-घर से कचरा उठाने और कचरे के सही प्रबंधन को मिशन क्लीन सिटी नाम दिया गया और इसे पूरे प्रदेश में लागू कर दिया गया । स्वच्छता दीदियों के कार्यों को सभी ने सराहा और इन महिला समूहों को देशभर में उत्कृष्ट कार्य करने का बेस्ट लाइवलीहुड अवार्ड भी वर्ष 2019 में मिला । अब समूह की महिलाएं दूसरे प्रदेश के लोगों को ट्रेनिंग दे रही हैं । अम्बिकापुर नगर निगम द्वारा अन्य प्रदेशों से ट्रेनिंग लेने आने वाले लोगों के लिए स्वच्छता दीक्षा सेंटर भी बनाया गया है, जिसमें बाहर के प्रतिनिधियों को कॉन्फ्रेंस और डिस्प्ले के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता है । देशभर के लगभग हर राज्य के प्रतिनिधि यहाँ आकर प्रशिक्षण ले चुके हैं, यहां तक कि नेपाल सरकार के मुख्य सचिव भी अपनी टीम के साथ यहां आकर ट्रेनिंग ले चुके हैं। वर्ष 2020 सर्वेक्षण में कचरे का कलेक्शन एव निपटान के साथ वेस्ट रिडक्शन हेतु अंबिकापुर में कई नवाचार किए गए । प्लास्टिक से दोना, सीमेंट प्लांट हेतु आरडीएफ, दीदी बर्तन बैंक, नेकी की दीवार आदि का प्रयोग कर जनसहभागिता सुनिश्चित किया गया । इस सर्वेक्षण में अंबिकापुर द्वारा तरल अपशिष्ट प्रबंधन में नालियों के पानी के उपचार हेतु प्राकृतिक पद्धति का प्रयोग कर वाटर रिसाइकलिंग के क्षेत्र में कार्य किया गया । उपचारित जल का प्रयोग निर्माण कार्य एवम् उद्यानों में किया जाता है । नगर के 36 सार्वजनिक एवं सामुदायिक शौचालयों का सौंदर्याकरण कर बेहतरीन सुविधा सुनिश्चित की गई है । स्वच्छता श्रृंगार योजना के माध्यम से समूह की दीदियों को रोजगार के साथ शौचालय संचालन की व्यवस्था दी गई है । नगर से निकलने वाले मल प्रबंधन हेतु एफ एसटीपी प्लांट की स्थापना की गई । वहीं, नगर के 3000 से ज्यादा परिवारों द्वारा होम कम्पोस्टिंग के द्वारा गीले कचरे का घरों में निष्पादन किया जा रहा है । निगम द्वारा तैयार खाद का विक्रय कर आय अर्जन ओर जैविक खेती को बढ़ावा देने में भी कार्य हो रहा है । नगर में निकलने वाले मलबे को प्रोसेसिंग कर विभिन्न उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं ।

चुनाव में कांग्रेस के 'फ्री' ऑफर से क्या मिलेगी सत्ता की चाबी

अजय कुमार

कांग्रेस ने हाल ही में हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए अपने घोषणा पत्र में कई आकर्षक वादे पेश किए हैं। इनमें से प्रमुख वादा 300 यूनिट मुफ्त बिजली देने का है, जो सीधे अरविंद केजरीवाल के मॉडल से प्रेरित है। भारतीय राजनीति में मुफ्त योजनाओं का चलन पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ा है, और यह एक ऐसी रणनीति बन गई है जिसे राजनीतिक दल अपने चुनावी अभियानों में बड़ी चतुराई से इस्तेमाल कर रहे हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का मुफ्त पानी और बिजली देने का मॉडल हो या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मुफ्त राशन देने का कार्यक्रम, ये सभी नीतियां राजनीतिक सफलता की कुंजी बन चुकी हैं। पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी से लेकर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन तक, सभी ने इन योजनाओं का उपयोग करके अपनी सत्ता को मजबूत किया है। अब हरियाणा में कांग्रेस ने इसी परंपरा को अपनाते हुए अपने चुनावी अभियान में एक नया मोड़ लिया है, जिससे वह पिछले दस वर्षों से सत्ता से बाहर रहने की स्थिति को बदलने का प्रयास कर रही है। कांग्रेस ने हाल ही में हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए अपने घोषणा पत्र में कई आकर्षक वादे पेश किए हैं। इनमें से प्रमुख वादा 300 यूनिट मुफ्त बिजली देने का है, जो सीधे अरविंद केजरीवाल के मॉडल से प्रेरित है। यह एक स्पष्ट संकेत है कि कांग्रेस ने समझ लिया है कि लोगों को सीधे लाभ पहुंचाने वाली योजनाएं ही उनकी राजनीतिक जीत की कुंजी हो सकती हैं। कांग्रेस के नेता इस बार अपने वादों में आत्मविश्वास से भरे नजर आ रहे हैं, और उन्होंने इन योजनाओं को लुभावना बनाने की हर संभव कोशिश की है। महिलाओं के प्रति कांग्रेस का यह नया दृष्टिकोण भी ध्यान देने योग्य है। पार्टी ने 18 वर्ष से ऊपर की प्रत्येक महिला को प्रतिमाह 2000 रुपये देने का वादा किया है। यह योजना मध्य प्रदेश की लाडली बहना योजना से प्रेरित है, जिसने उस राज्य में चुनावी परिणामों को पलटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कांग्रेस का यह वादा महिलाओं को सीधे आर्थिक सहायता देकर उन्हें अपने पक्ष में करने की एक रणनीति है। इसके अतिरिक्त, बुजुर्गों, दिव्यांगों और विधवाओं को भी छह हजार रुपये की पेंशन देने का प्रस्ताव रखा गया है, जो कि एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है। किसानों को आकर्षित करने के लिए कांग्रेस ने एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) को कानूनी गारंटी देने का वादा किया है। यह घोषणा किसानों के हित में महत्वपूर्ण मानी जा रही है, और इससे यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस ने ग्रामीण समुदाय की चिंताओं को समझा है। भारतीय राजनीति में किसानों का एक अहम स्थान है, और उनकी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करना हमेशा से राजनीतिक दलों के लिए फायदेमंद रहा है। इसके अलावा, कांग्रेस ने किसानों को तुरंत मुआवजे का आश्वासन देकर उनकी समस्याओं को तेजी से हल करने का भी वादा किया है। कांग्रेस ने तेलंगाना के मॉडल को भी अपनाने की कोशिश की है, जिसमें गैस सिलेंडर के लिए मात्र 500 रुपये देने का प्रस्ताव है। यह योजना गरीब परिवारों के लिए महत्वपूर्ण है, और इसके तहत 100 गज के मुफ्त प्लॉट और पक्के मकान देने का भी वादा किया गया है। यह आवास की समस्या को हल करने में मदद करेगा और नागरिकों को एक स्थायी घर प्रदान करेगा। कांग्रेस ने राजस्थान की चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना को भी अपने घोषणा पत्र में शामिल किया है। इसके तहत गरीबों के लिए 25 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज उपलब्ध कराने का वादा किया गया है। स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और उपलब्धता पर हाल के वर्षों में सवाल उठते रहे हैं, और यह योजना कांग्रेस के लिए एक महत्वपूर्ण दांव साबित हो सकती है। हालांकि राजस्थान में यह योजना अपेक्षित सफलता नहीं प्राप्त कर पाई थी, लेकिन हरियाणा में इसकी लोकप्रियता को लेकर सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं। कांग्रेस ने ओल्ड पेंशन स्कीम को लागू करने का भी भरोसा दिया है, जो सरकारी कर्मचारियों की एक बड़ी मांग है। इस योजना से न केवल कर्मचारियों को, बल्कि उनके परिवारों को भी फायदा होगा, और इससे कांग्रेस का समर्थन बढ़ सकता है। चुनावी प्रचार में कांग्रेस ने अपनी योजनाओं को प्रभावशाली तरीके से पेश किया है, जो दर्शाता है कि वह अपने मतदाताओं को खुश करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। हालांकि, कांग्रेस के इन दावों की सफलता केवल चुनाव के नतीजों पर निर्भर करेगी। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि मुफ्त योजनाएं हमेशा कारगर नहीं होतीं। कई बार मतदाता इन योजनाओं के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को भी ध्यान में रखते हैं। भ्रष्टाचार, प्रशासनिक विफलता और कानून-व्यवस्था की स्थिति जैसे मुद्दे भी मतदाताओं के फैसले को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, हरियाणा में कांग्रेस ने चुनावी मैदान में उतरते हुए एक महत्वपूर्ण रणनीति अपनाई है। अब देखना यह है कि क्या ये मुफ्त योजनाएं वास्तव में उन्हें सत्ता में वापस लाने में मदद कर पाएंगी या नहीं। भाजपा और अन्य दलों की प्रतिक्रियाएं भी इस चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। अंततः, हरियाणा का चुनाव यह साबित करने के लिए एक बड़ा मंच होगा कि मुफ्त योजनाएं कितनी प्रभावी हैं और क्या वे एक राजनीतिक दल की किस्मत को बदलने में सक्षम हैं। कांग्रेस की यह कोशिश एक संकेत है कि चुनावी राजनीति में सामाजिक कल्याण की योजनाएं अब एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, और यह देखा जाना बाकी है कि क्या ये योजनाएं हरियाणा में कांग्रेस के लिए राजनीतिक सफलता की चाबी बन पाएंगी।

सिक्खों की सहानुभूति बटोरने में नाकाम रहे राहुल

योगेंद्र योगी

राहुल गांधी ने कहा था कि वो अल्पसंख्यकों को उनका हक़ दिलाने और उनको बैखौफ होकर जीने की आजादी दिलाने के लिए लड़ रहे हैं, उनकी लड़ाई इस बात की है कि भारत में सिखों को पगड़ी बांधने में डर न लगे, कड़ा पहनने से कोई न रोके, वे गुरुद्वारों में बेखौफ होकर जा सकें। लगातार तीन बार लोकसभा चुनावों में हार के बावजूद कांग्रेस का अल्पसंख्यकों के प्रति मोह कम नहीं हुआ है। कांग्रेस ने लोकसभा सहित चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में तीन में करारी शिकस्त खाने के बावजूद कोई सबक नहीं सीखा है। कांग्रेस बयानों के जरिए यह साबित करने पर तुली हुई कि वह सही मायने अल्पसंख्यकों की खैरख्वाह है। ऐसी राजनीति की कीमत कांग्रेस को चुकानी पड़ी है। दो दशक पहले तक दबे-छिपे तरीके से हिन्दुओं की बात करने वाली भाजपा खुल कर सामने आ गई। इससे देश में हिन्दू-मुस्लिम मतदाताओं का स्पष्ट ध्रुवीकरण नजर आता है। अल्पसंख्यकों की हितैषी साबित करने के लिए कांगेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने अमरीका में सिक्खों की भारत में सुरक्षा को लेकर बयान देकर संगठन को मुश्किल में डाल दिया। पहले मुसलमानों और अब सिक्खों को लेकर दिए गए बयान से कांग्रेस भाजपा के निशाने पर आ गई। राहुल गांधी के बयान से खालिस्तान की मांग करने वाले पृथक्तावादी संगठन के प्रमुख गुरुपंत सिंह पन्नू को जहर उगलने का मौका मिल गया। राहुल गांधी ने कहा था कि वो अल्पसंख्यकों को उनका हक़ दिलाने और उनको बैखौफ होकर जीने की आजादी दिलाने के लिए लड़ रहे हैं, उनकी लड़ाई इस बात की है कि भारत में सिखों को पगड़ी बांधने में डर न लगे, कड़ा पहनने से कोई न रोके, वे गुरुद्वारों में बेखौफ होकर जा सकें। इसके बाद खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने राहुल गांधी के बयान को बिल्कुल सही बताया। जो बात राहुल गांधी कह रहे हैं, वो बात पन्नू भी मानता है। राहुल और उसकी लाइन एक है। राहुल गांधी की खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने तारीफ कर दी। पन्नू ने एक बयान जारी करके कहा कि राहुल गांधी ने सिखों के बारे में जो कुछ बोला, उसमें खालिस्तान समर्थक संगठन 'सिख फॉर जस्टिस' की बात का समर्थन है। बड़ी बात ये है कि राहुल गांधी की बात को उस सिख नौजवान भलिंदर सिंह ने भी गलत बताया जिसका नाम पूछ कर वॉशिंगटन में राहुल ने भारत में सिखों की स्थिति के बारे में गलतबयानी की थी। भलिंदर सिंह विरमानी ने खुद सोशल मीडिया पर अपना वीडियो पोस्ट करते हुए

कहा कि राहुल गांधी ने उनका नाम पूछकर सिखों को लेकर जो कमेंट किया, वो पूरी तरह गलत था। भलिंदर सिंह ने कहा कि वो खुद भारतीय हैं, कुछ दिनों के लिए अमेरिका आए हैं, उन्होंने भारत में कभी नहीं देखा कि किसी सिख को पगड़ी पहनने या कड़ा पहनने से रोका गया हो या किसी को गुरुद्वारे जाने में कोई दिक्कत हुई हो। देश में सिक्खों को लेकर प्यू रिसर्च सेंटर की सर्वे रिपोर्ट 2021 में प्रकाशित हुई थी। प्यू रिसर्च सेंटर ने यह सर्वे 2019 से 2020 के बीच कराया था। इस सर्वे में महज 14 फीसदी सिखों ने ही माना था कि भारत में सिखों के साथ भेदभाव होता है। मगर अधिकतर सिखों का मानना था कि उन्हें भारत में कोई भेदभाव नहीं दिखता। इस रपोर्ट के मुताबिक, करीब 95 फीसदी सिख खुद को भारतीय होने पर बहुत गर्व करते हैं। इतना ही नहीं, बहुमत यानी 70 फीसदी सिखों का मानना है कि जो व्यक्ति भारत का अनादर करता है, वो सिख हो ही नहीं सकता। वॉशिंगटन डीसी में राहुल गांधी ने दुनिया भर में भारत-विरोधी प्रचार करने वाली अमेरिकी सांसद इल्हान उमर से मुलाकात की। इल्हान उमर डेमोक्रेटिक पार्टी की नेता हैं, वो खुले तौर पर पाकिस्तान की हिमायती हैं, हर मंच पर भारत का विरोध करती हैं। राहुल गांधी अमेरिकी सांसदों के जिस प्रतिनिधिमंडल से मिले, उसमें इल्हान उमर को खासतौर पर बुलाया गया था। इल्हान उमर वही हैं, जिन्होंने 2022 में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में जाकर कहा था कि कश्मीर पर भारत का कोई हक़ नहीं है, भारत को कश्मीर छोडऩा ही पड़ेगा। जून 2023 में इल्हान उमर अमेरिका की संसद में भारत के खिलाफ एक प्रस्ताव लेकर आई थीं, जिसमें अमेरिकी विदेश मंत्रालय से अपील की गई थी कि वह भारत को एक ऐसा देश घोषित करे जहां पर धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का हनन होता है, जहां मुसलमान सुरक्षित नहीं है। कांग्रेस के नेताओं के पास इस बात का भी जवाब नहीं है कि राहुल गांधी पाकितान समर्थक इल्हान उमर से क्यों मिले? इल्हान तो हमेशा से भारत के खिलाफरही हैं। कांग्रेस ने हमेशा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग माना है। अनुच्छेद 370 पर राहुल गांधी का ढुलमुल रवैया रहा है। राहुल गांधी जम्मू कश्मीर के दौरे पर पार्टी नेताओं का फीडबैक लेने पहुंचे थे, तब भी वे अनुच्छेद 370 के मुद्दे पर साइलेंट मोड में दिखे थे। हालांकि कांग्रेस जिस दल के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही उसका इस मुद्दे पर मत कुछ अलग है। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने अपने घोषणा पत्र में साफ कर दिया है कि अगर हमारी सरकार बनती है तो अनुच्छेद 370 और 35 ए की बहाली की जाएगी। हालांकि नेशनल कान्फ्रेंस किस आधार पर अनुच्छेद 370 की वापसी की बात कर रही है वो समझ से परे है। क्योंकि यह साधारण सी बात है कि केंद्र में सत्ता मिलने पर ही अनुच्छेद 370 की वापसी संभव हो सकती है।

नकारात्मक ऊर्जा से कैसे बचें

मनुष्य का जीवन कोरे कागज की तरह अच्छा सोचो, अच्छा लिखो : आचार्य श्री विमर्शरसागर जी महाराज

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। श्री 1008 महावीर दिगम्बर जैन मंदिर कृष्णानगर में मंगल चातुर्मास कर रहे चरम पूज्यनीय जिनागम पंथ प्रवर्तक, जीवन है यानी की बूँद-महाकाव्य मूल रचयिता, विमर्श एम्बिसा, विमर्श लिपि के सृजेता भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज के मुखारविन्द से प्रतिदिन प्रात: 8:00 बजे से श्री भक्तमर महिमा पर विशेष व्याख्यान माला चल रही है। आचार्य भगवन् ने धर्मसभा को संबोधित करते हुये कहा कि हम अपने जीवन की सँवारने, सुधारने और सुन्दर बनाने की भावना रखते है। लेकिन मात्र भवना से जीवन सौन्दर्य नहीं आता, जीवन में सौदर्य के लिये सुन्दर आचरण का होना अनिवार्य है।

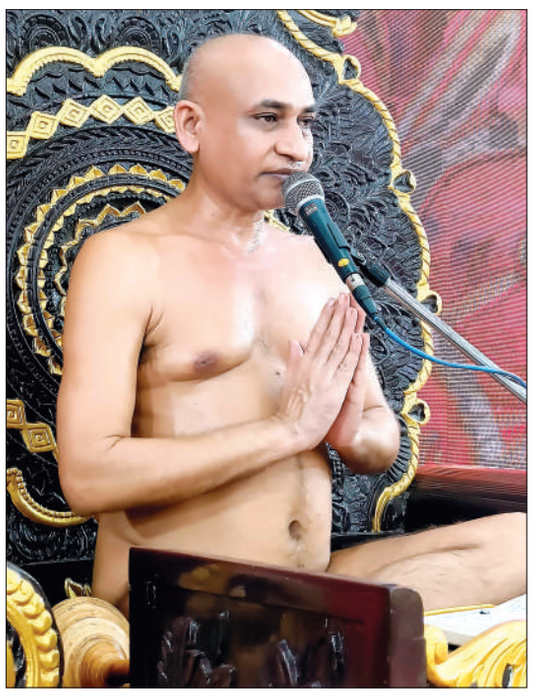

यह मनुष्य जीवन में हमें कोरे कागज की तरह प्राप्त हुआ और इस कागज पर लिखना भी अनिवार्य है। जब लिखना ही है तो क्यों न कुछ ऐसा लिख जाये पढ़ने में स्वयं के लिय भी सुखकर हो और दूसरों के लिये भी प्रेरक हो। बचन वर्गणायें गर प्राप्त हुई है और तो उनका उपयोग हित-मित प्रिय वाणी के लिये करना चाहिये। कभी अपने मुख से शब्दों का ऐसा कोई प्रयोग न हो जो दूसरों के लिये कष्टप्रद हो, दूसरों को सुनने में अप्रिय न हो। वचनों का प्रयोग कुछ इस प्रकार हो कि घावों पर मल्हम की तरह काम करें। महान पुण्योदय से अगर ये पंचेन्द्रिय पर्याय और मन मिला है तो मन से सम्यक चिंतन करें, अच्छा और सच्चा चिंतन करें। जैसे आप अपने लिये सोचते हैं वैसा ही आप सबके लिये सोचें। जैसे अपने लिये आप सब अच्छा चाहते है वैसा ही सबसे लिए अच्छा सोचें। निश्चित ही आपका जीवन सुंदर बनेगा जो सबके लिए प्रेरक होगा।

जैसा हमारा चिंतन होता है वैसी ही हमारी जीवन शैली बनने लगती है। हमारा चिंतन अगर सकारात्मक है तो हमारे चारों तरफ एक ऐसा प्रशस्त आभामंडल निर्मित होता है जो हमारे जीवन से निराश अवसाद और नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर देता है।

सकारात्मक चिंतन वाले व्यक्ति कभी नकारात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं करते, उनके वचनों में भी ऐसी ऊर्जा निहित होती है कि सुनने वाले भी प्रभावित हुये बिना न रह पायें और उनके वचनों से प्रभावित होकर उनके अनुरूप ही बदल जाते है। आचार्य श्री के सानिध्य में प्रतिदिन शाम 6:15 पर आचार्य वंदना गुरूभक्ति एवं टूडेज सोलुशन, आरती आदि कार्यक्रम संपन्न होते है। **-विशु दीदी**

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज कृत वस्तुत्व महाकाव्य पर आधारित भट्टारक संगोठी संपन्न हुआ

नांदणी (विश्व परिवार)। आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज कृत वस्तुत्व महाकाव्य पर आधारित भट्टारक संगोष्ठी- चारुकीर्ती भट्टारक जी मुडबिद्री, देवेंद्रकीर्ती भट्टारक जी हुमचा, भानुकीर्ती भट्टारक जी कंबदहल्ली, सौरभसेन भट्टारक जी तिजारा और जिनसेन भट्टारक जी नांदणी आदि भट्टारकों के उपस्थिती में सानंद संपन्न हुआ। चर्या शिरोमणी दिगम्बर जैन आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ने नांदणी (महाराष्ट्र) में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि अंतिम तिर्थेश वर्धमान स्वामी के शासन में हम सभी विराजते हैं। तीर्थंकर भगवान की पीयूष देशना जिनेंद्रवाणी जगतकल्याणी है। यह सर्वज्ञशासन, नमोस्तुशासन जयवन्त हो। जयवन्त हो वितरागी श्रमणसंस्कृती।

चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ने नांदणी (महाराष्ट्र) के जन-जन में प्रवाहित की आध्यात्म की धारा। आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज कृत वस्तुत्व महाकाव्य पर आधारित भट्टारक संगोष्टी 22 सितंबर से 24 सितंबर तक नांदणी महाराष्ट्र में सानंद संपन्न हुआ। जिसमें चारुकीर्ती भट्टारक जी मुडबिद्री, देवेंद्रकीर्ती भट्टारक जी हुमचा, भानुकीर्ती भट्टारक जी कंबदहल्ली, सौरभसेन भट्टारक जी तिजारा और जिनसेन भट्टारक जी नांदणी आदि भट्टारकों के उपस्थिती में भट्टारक सांगोष्टी सानंद संपन्न हुआ।

जैन दर्शन में ज्ञान संज्ञा उसी की है जिससे तत्वों का बोध हो। चित्त का निरोध हो, जिससे आत्मा विशुद्ध हो। ज्ञान का उद्देश्य मात्र अक्षर-ज्ञान नहीं है, अपितु ज्ञान आत्म-कल्याण का हेतु बने और हो सके तो पर का पथ-प्रदर्शक बने। जिस ज्ञान से दु:खों से मुक्ति हो, जिससे आत्मा के स्वभावभूत शुद्ध स्वरूप का साक्षात्कार हो वही ज्ञान सम्यक्- ज्ञान है। हे नरोत्तम! सम्यकदर्शन के बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान के बिना चारित्रगुण नही और चारित्र के बिना निर्वाण नहीं। ज्ञान बिना सब शून्य है। क्रियाशून्य ज्ञान व्यर्थ है, अज्ञानी की क्रिया व्यर्थ है। वहीं ज्ञान कल्याणकारी है जिससे चरित्र की शुद्धि, आचरण की शुद्धि, आत्म जागृति हो। वात्सल्य, करुणा, दया, क्षमा, धैर्यादि गुणों की प्राप्ति हो। वहीं ज्ञान ङ्क ज्ञान है शेश अज्ञान है। धीर, वीर, गंभीर, आचारवान, अनुशासनशील, विनयी, उत्साही, शमावान, सत्य प्रिय ही ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। क्रोधी, चुगलखोर, संकलेश करने वाला, इन्द्रिय लोलुपी, चारित्र हीन, विचार-विहीन, अनुशासन शून्य मायावी मनुष्य सत्य ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता है। ज्ञान अमृत के समान है, अज्ञान विष है। ज्ञान प्रकाश है, अज्ञान अंधकार है। ज्ञान सुख का कारण है, अज्ञान ही दु:ख है। ज्ञान मुक्ति पथ का प्रेरक है, अज्ञान कर्म- बंध में सहायक है। हे ज्ञानधन चैतन्य भगवानात्मा। ज्ञान की ओर दृष्टिपात करो। आत्मकल्याण में परोपकारी ज्ञान को प्राप्त करो। यदि समीचीन ज्ञान को प्राप्त करना है तो ज्ञान के सागर दिगम्बर आचार्य भगवन्त, धरती के देवता मुनिराज, ज्ञान प्रदाता उपाध्याय- पाठक परमेष्ठी की श्रद्धापूर्वक शीघ्रातिशीघ्र शरण प्राप्त करो। हे जीवात्मा! ज्ञान के समान उपकारी संसार में अन्य कोई समीचीन कारण नहीं है। ज्ञान से शून्य कोटि-कोटि वर्षों तक किया गया तप भी कल्याणकारी नहीं है। ज्ञान पूर्वक शन मात्र की गई साधना भी सिद्धत्व की ओर प्रमाण है। शास्वत सुख की चाह है, तो हे भव्य आत्मा! सम्यक् ज्ञान की निधि प्राप्त करो। ज्ञान वह रत्न है जो श्रद्धा सम्यक्त्व और चारित्र को चमक प्रदान करता है। सम्यक-ज्ञान ही आनन्द है। **-अभिषेक अशोक पाटील**

संक्षिप्त समाचार

तमनार तथा बगीचा में खुलेगी अपेक्स बैंक की नवीन शाखा, अपेक्स बैंक की 25वीं वार्षिक आमसभा सम्पन्न

रायपुर (आरएनएस)। अपेक्स बैंक की दो नवीन शाखा तमनार और बगीचा में जल्द खुलेंगी। यह जानकारी आज छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी बैंक (अपेक्स बैंक) की 25 वी वार्षिक आमसभा की बैठक में अपेक्स बैंक के प्राधिकृत अधिकारी कुलदीप शर्मा ने दी। उन्होंने बताया कि इन शाखाओं को प्रारंभ करने के लिए रिजर्व बैंक की अनुमति मिल चुकी है। अपेक्स बैंक की वार्षिक आमसभा में अपेक्स बैंक के प्राधिकृत अधिकारी कुलदीप शर्मा ने बैंक की वित्तीय पत्रक प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अपेक्स बैंक की अंशपूजी 218.13 करोड़, निधियाँ (रिजर्व) 640.48 करोड़, ऋण एवं अमानत राशि 8440.88 करोड़, स्वयं की निधियाँ 429.27 करोड़ रूपये है। अपेक्स बैंक ने 36.32 करोड़ रूपये का लाभार्जन किया है। उन्होंने बताया कि अपेक्स बैंक की वर्ष 2000 में मात्र 3 शाखाए थी जो अब बढकर 15 हो गई है। उन्होंने कहा कि रिजर्व बैंक से अपेक्स बैंक की तमनार तथा बगीचा मे नवीन शाखा खोलने की अनुमति मिल गई है। आमसभा मे जिला सहकारी केंद्रीय बैंक राजनांदगांव प्रतिनिधि शशिकांत द्विवेदी, लक्ष्मी महिला नागरिक सहकारी बैंक अध्यक्ष सत्यबाला अग्रवाल, अपर पंजीयक हितेश दोषी, अपेक्स बैंक प्रबंध संचालक के एन कांडे, महाप्रबंधक युगल वर्मा, डीजीएम भूपेश चंद्रवंशी सहित विभिन्न जिलों से आए जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, नागरिक सहकारी बैंकों के प्रतिनिधि, कर्मचारी सहकारी साख समितियों के प्रतिनिधि और बैंक के अंशधारी प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

सौम्या चौरसिया को सुप्रीम कोर्ट से मिली राहत, शर्तों के साथ मिली जमानत

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की उपसचिव रहीं सौम्या चौरसिया को सुप्रीम कोर्ट ने शर्तों के साथ जमानत दे दी है। वे दिसंबर 2022 से कोयला लेवी मामले में ईडी द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद से रायपुर की सेंट्रल जेल में कैद थीं। सुप्रीम कोर्ट ने उनकी याचिका पर सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रखा था, जो आज सुनाया गया। सौम्या चौरसिया पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम कानून के तहत कोयला लेवी मामले में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया था। दिसंबर 2022 में उनकी गिरफ्तारी के बाद से वे रायपुर की सेंट्रल जेल में कैद थीं। कोर्ट ने उनकी जमानत याचिका पर विचार करने के बाद शर्तों के साथ जमानत दी है। हालांकि, सौम्या चौरसिया फिलहाल जेल में ही रहेंगी, क्योंकि राज्य की भाजपा सरकार बनने के बाद आर्थिक अपराध शाखा ने भी उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का एक और मामला दर्ज किया है। इस नए मामले में भी कानूनी प्रक्रिया चल रही है, जिसके चलते वे जेल से बाहर नहीं आ सकेंगी। सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से सौम्या चौरसिया को बड़ी राहत मिली है, लेकिन नए मामले के चलते उन्हें फिलहाल जेल में ही रहना होगा।

आज शाम 150 एमएलडी प्लांट से भरने वाली सभी टंकियों से जलप्रदाय व्यवस्था प्रभावित रहेगी

रायपुर (आरएनएस)। रायपुर नगर पालिक निगम के कार्यपलन अभियंता (फिल्टरप्लांट) श्री शरद ध्रुव ने जानकारी देते हुए बताया कि छ.ग. राज्य विद्युत वितरण कंपनी मर्यादित द्वारा 33 लाईन विस्तार एवं आवश्यक सुधार कार्य हेतु फिल्टरप्लांट फीडर में 26 सितम्बर को के.व्ही. इंटेकवेल आउटगोईंग एवं 11 केवी. फिल्टर प्लांट फीडर में दिनांक 26 सितम्बर 2024 को लाईन विस्तार एवं आवश्यक सुधार कार्य किया जाना प्रस्तावित है। जिसके कारण 33 के.व्ही. लाईन इंटेकवेल एवं 11 केव्ही. फिल्टर प्लांट फीडर में विद्युत प्रवाह दिनांक 26 सितम्बर 2024 को सुबह 10.00 बजे से दोपहर 02.00 बजे तक बंद रहेगा । जिसके कारण 47.5 एम.एल.डी. प्लांट, 80 एम.एल.डी. पुराना, 80 एम.एल.डी. नया एवं 150 एम.एल.डी. से भरने वाली सभी टंकियों में दिनांक 26 सितम्बर 2024 गुरूवार को सुबह जलप्रदाय होने के पश्चात् शाम को जलप्रदाय व्यवस्था प्रभावित रहेगी। उपरोक्त के अलावा शहर में स्थित अन्य जलागारो एवं पावर पंपो से जलप्रदाय यथावत रहेगा।

मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने कहा- लक्ष्य बनाओ पुरुषार्थ जगाओ

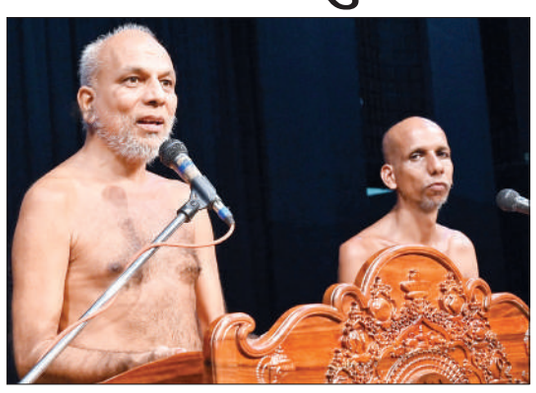

इंदौर (विश्व परिवार)। जो लोग अपने संचित पुण्य का उपभोग कर पाप में व्यय करते हैं तथा उसका दुरुपयोग करते है वही अगले जन्म में भिखारी बनते है, लक्ष्य बनाओ पुरुषार्थ जगाओ। उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने मोहताभवन रैसकोर्स रोड़ पर व्यक्त किये।उन्होंने कहा विचार कीजिये कि यदि विकलांग, दीन हीन शरीर मिला होता तो कंही पर बैठे भीख मांग रहे होते उन्होंने कहा कि यह जो स्वस्थ शरीर मिला है, यह भी कोई साधारण घटना नहीं है, अच्छे शरीर के साथ साथ आप सभी को भरा पूरा अच्छा परिवार मिला है, धन संपन्नता मिली है, अपने पुण्य की सराहना कीजिये और आभार व्यक्त कीजिये उस प्रभु का जिन्होंने आपको अच्छी बुद्धि दी, अच्छे संस्कार दिये, जिसके परिणाम स्वरूप आप एक अच्छे नागरिक का जीवन जी रहे है, मुनि श्री ने पूंछा यह जो अनूकूल संयोग मिले है, वह पुण्य के संयोग से मिले है उस पुण्य को सम्हाल कर रखना है या उसे ऐसे ही गंवाना है? आप मौज मस्ती या रास रंग करोगे तो पुण्य का सदुपयोग होगा या पुण्य का उपभोग उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन कड़वी तुम्वी के समान है, इसका यदि उपभोग करोगे तो मर जाओगे और उपयोग करोगे तो तर जाओगे संचित पुण्य के उपभोग में पाप की वृद्धि होगी, और पुण्य के फल का त्याग करने पर पुण्य में और वृद्धि होती है। उन्होंने पंचतंत्र की कहानी सुनाते हुये कहा कि एक चुहा विल्ली से परेशान था वह गुहार लगाते हुये संत के पास पहुंचा और अपनी व्यथा कथा सुनाई संत को बचन सिद्धी थी उन्होंने उस चुहे को विल्ली बना दिया विल्ली बनने के पश्चात कुत्ता उसके पीछे लग गया तो वह फिर संत के पास आया तो उसे कुत्ता बना दिया कुत्ता बनने के पश्चात अंत में शेर बनाया और उसके मन में पाप आ गया कि कंही ये संत मुझे पुन्हा चुहा न बना दे और वह संत पर झपट्टा मारता है कि संत उसके मन की बात जानकर उसे पुन्हा चुहा बना देते है। मुनि श्री ने कहा जीवन में अनुकूल साधन है, तो उनका उपयोग कम से कम कीजिये, खुद के प्रति जागरूक बनिये कि में क्या कर रहा हुं? अपने संचित पुण्य को पाप के कार्यों में लगा देते है पुण्य को पाप में नहीं वल्कि पुण्य की क्रिआओं में लगाइए जिससे पुण्य का बेलेंस बड़ता रहे। उपरोक्त जानकारी देते हुये प्रवक्ता अविनाश जैन तथा मीडिया प्रभारी राहुल जैन ने बताया भक्तामर के काव्यों की बाचना सुक्रवार 27 सितंवर से8:30 बजे से शुभारंभ होगी धर्मप्रभावना समिति के अध्यक्ष अशोक जैन महोत्सव अध्यक्ष नवीन गोधा महामंत्री हर्ष जैन, सहित समस्त पदाधिकारियों ने सभी से अनुरोधों किया है कि समय पर पधार कर धर्म लाभ लें। **-अविनाश जैन**

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने सन्मति भवन पारसोला में केश लोचन किया

पारसोला (विश्व परिवार)। प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवती आचार्य श्री शांति सागर जी की मूल बाल ब्रह्मचारी पट्ट परंपरा के पंचम पट्टाधीश आचार्य वर्धमान सागर जी सन्मति भवन पारसोला में संघ सहित विराजित होकर चातुर्मास कर रहे हैं आज अनेक श्रद्धालुओं के सामने गुरुदेव श्री वर्धमान सागर जी ने केश लोचन किया।केश लोचन के बारे में संघ के मुनि श्री हितेंद्र सागर जी ने चर्चा में बताया कि प्रत्येक दिगंबर साधु को 2 माह से 4 माह की अवधि के भीतर के केशलोचन करना अनिवार्य है केशलोच दिगंबर साधु का मूल गुण है। केश लोचन के माध्यम से शरीर से राग और मोह दूर होता है केश लोचन की प्रक्रिया में मुनि श्री ने बताया कि केश्लोचन करते समय केवल राख का उपयोग किया जाता मुनि श्री ने बताया कि जैन धर्म अहिंसा प्रधान धर्म है बालों का लोचन अगर नहीं किए जाएं तो उसमें छोटे-छोटे जीवो की उत्पत्ति होने की संभावना होती है जैन साधु अहिंसा धर्म के महाव्रती होते हैं। बाल हाथों से इसलिए उखाड़े जाते हैं कि बालों को कटिंग करने के लिए सेविंग कराने के लिए अन्य द्रव्य की आवश्यकता होती है जैन साधु अपरिग्रही होते हैं। इसलिए जैन साधु अपने हाथ से केशलोचन करते हैं बाल सौंदर्य का प्रतीक हैं इससे राग और आकर्षण होता है। केश लोच से शरीर से ममत्व दूर होता है केश लोचन के समय तप,संयम, धैर्य के साथ धर्म की प्रभावना होती है जिस दिन जैन साधु केशलोच करते हैं उस दिन उपवास करते हैं।केश लोचन देखकर अनुमोदना करने से पुण्य की प्राप्ति होती है कर्मों की निर्जरा होती है। इस अवसर पर अनेक समाज जन उपस्थित रहे। अनेक महिलाओ ने वैराग्य पूर्ण भजन गा कर केशलोचन की तपस्या की अनुमोदना की।राजेश पंचोलिया अनुसार इसके पूर्व आयोजित धर्म सभा में आर्यिका दिव्य मति माताजी ने धर्म देशना में बताया कि एक अगर किसी के मुंह में नमक की डली है तो उसे मिठाई का स्वाद नहीं आएगा उसी प्रकार जब तक इंसान के हृदय मन में मिथ्यात्व भरा हुआ है तब तक उसे गुरु उपदेश के रूप में सम्यक दर्शन सम्यकज्ञान, सम्यक चारित्र का लाभ नहीं मिलेगा।आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की देव शास्त्र गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा थी उन्होंने कुदेवो का विसर्जन कराया ,जिनालय का संरक्षण कराया और जिनवाणी को तांबे के पत्रों पर अंकित कराया?। आर्यिका निर्मोह मति ने भी धर्म उपदेश में बताया कि आचार्य शांति सागर जी महाराज ने साधुओं के लिए आदर्श स्थापित किया। माताजी ने साधुओं को दिए जाने वाले आहार दान की सामग्री की मर्यादा का ध्यान रखकर आहार दान देना चाहिए। **-राजेश पंचोलिया**

आर्यिका गुरुमति-दृढमति माताजी ससंघ के सानिध्य में चौक मंदिर भोपाल में अलका बनी अलख श्री माता जी

ललितपुर की बेटी ने दशम प्रतिमा लेकर शुरू की समाधि संलेखना की साधना

माता जी के सानिध्य में संलेखना समाधि महोत्सव में पुण्यार्जन कर रहे श्रावक

ललितपुर (विश्व परिवार)। भोपाल के दिगम्बर जैन मंदिर चौक में संत शिरोमणि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज संघ की परम प्रभावक ज्येष्ठ आर्यिका रत्न गुरुमति माताजी एवं दृढमति माता जी के ससंघ सानिध्य में ललितपुर नगर कटरा बाजार निवासी श्रावक श्रेष्ठी कोमलचंद्र जैन बानौनी वालों की पुत्री अलका जैन की समाधि संलेखना की साधना प्रभावना पूर्वक चल रही है। साधनारत अलका जैन को उनके पति भोपाल निवासी वीर कुमार जैन 22 सितम्बर रविवार को प्रात: काल आर्यिका मां के सानिध्य में संलेखना समाधि की भावना के साथ चौक जैन मंदिर लाए जहां आर्यिका माता जी को अलका जैन की धार्मिक भावनाओं से अवगत कराया और इच्छा जाहिर करते हुए बताया के अलका जैन को विगत 4 वर्षों से कैंसर है जिसमें अनगिनत कीमों आदि हो चुके हैं। विगत 25 दिनों से अन्न का त्याग कर दिया है तथा सात दिन से मात्र जल आदि ग्रहण कर रही हैं। आर्यिका माता जी ने उनकी धार्मिक भावना और इच्छा को देखते हुए संयम व्रत दिए और गृह का त्याग का नियम दिया। 24 सितम्बर को आर्यिका संघ के सानिध्य में आर्यिका गुरूमति माता जी एवं आर्यिका दृढमति माता जी ने दर्शन प्रतिमा देकर अलका जैन को अलख श्री माता जी की दीक्षा जयजयकारों के बीच प्रदान की। दशम प्रतिमाधारी अलख श्री माता जी संलेखाना समाधिरत हैं जहां आर्यिका संघ का सानिध्य मिल रहा है। ब्रहमचारिणी बहिनों के साथ समाज की श्राविकाएं सेवा कर पुण्यार्जन कर रही हैं। संत निवास में इन दिनों संलेल्खना समाधि से वैराग्य का माहौल है।समूची भोपाल जैन समाज के ट्रस्टीगण एवं पदाधिकारी इस कार्य में सहभागी बनकर धर्मलाभ ले रहे हैं।

बचपन की सहेली अंशू ने निभाई अहम भूमिका : जैसा कि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर जी महाराज ने वैराग्य के लिए सूत्र दिया कि जीवन में वैराग्य कब उमड़ जाए कहा नहीं जा सकता ऐसा ही कुछ अलका जैन के साथ हुआ। धार्मिक परिवार के संस्कारों में पली। 18 वर्ष के वैवाहिक जीवन में धार्मिक संस्कारों के बीच अलका जैन की भावना उनके बचपन की सहेली अंशू अलया ललितपुर जो कि भोपाल चौक बाजार में ही सीए वैभव चौधरी के साथ वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही थी,वह भली भाँति परिचित थी । आर्यिका माता जी के सम्मुख अलका जैन की भावना रखी और परिवार के बीच सहमति बनाते हुए अलका जैन को आर्यिका माता जी के दर्शनार्थ लायी। स्मरण रहे अलका जैन अपनी चार बहिनों में सबसे छोटी है उनको एक बेटी एवं एक पुत्र है जो धार्मिक विचारों से ओतप्रोत है। **-अक्षय अलया**

कैट सी.जी. चैप्टर ने अपनी 3 वर्ष के उपलब्धि की पत्रिका का विमोचन किया : अमर परवानी

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि कैट के प्रदेश कार्यालय में एक कार्यक्रम आयोजित कर कैट सी.जी. चैप्टर ने अपनी 3 वर्ष के उपलब्धि की पत्रिका का विमोचन कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी जी के द्वारा किया गया। कैट के पत्रिका विमोचन कार्यक्रम में कैट के जिला ईकाईयों, व्यापारी, व्यापारिक संगठनो, कैट एवं युवा टीम के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र दोशी ने बताया कि कैट के प्रदेश कार्यालय में एक कार्यक्रम आयोजित कर कैट सी.जी. चैप्टर ने अपनी 3 वर्ष के उपलब्धि की पत्रिका का विमोचन किया गया। उन्होनें आगे कहा कि कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) एक राष्ट्रीय व्यापारिक संगठन है जो विगत 33 वर्षो से पूरे भारत वर्ष में निरंतर कार्यरत है। इस संस्था में लगभग पूरे भारत वर्ष से पैतालीस हजार एसोसिएशन जुड़े हुए है, जिनके माध्यम से 8 करोड़ व्यापारी जुडे हुए है।

कैट के पत्रिका विमोचन करते हुए श्री पारवानी जी कहा कि आज यह अत्यंत हर्ष का विषय है, कि कैट के पत्रिका का विमोचन मेरे द्वारा किया जा रहा है। पत्रिका में कैट सी.जी. चैप्टर के विगत 3 वर्षो में व्यापारिक हितो में किये गये कार्यो का समावेश किया गया है। जो कि कैट के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। पत्रिका में प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री विष्णुदेव साय जी ने कैट को शुभकामनांए संदेश प्रेषित किये है। कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री बी.सी. भरतिया जी एवं कैट के राष्ट्रीय महासचिव प्रवीण खण्डेलवाल जी ने कैट को शुभकामनांए संदेश प्रेषित किये है। कैट प्रदेश के 12 लाख व्यापारियों से अपील करती है, कि कैट सी.जी. चैप्टर की पत्रिका का अवलोकन कर कैट द्वारा व्यापारी हितों में किये कार्यो से अवगत होवें। पारवानी एवं दोशी ने बताया कि कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) प्रदेश के 12 लाख से अधिक व्यापारी एवं उद्योग का प्रतिनिधित्व करती है। कैट सी.जी. चैप्टर ने छत्तीसगढ राज्य के व्यापारियों हितों में कार्य करती आ रही है। कैट व्यापारिक हितों की जानकारी प्रदेश के सभी व्यापारियों को देकर उन्हे जागरूक करती आ रही है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 26 सितंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

तीन शो-रूम का टूटा ताला, लाखों की चोरी

जगदलपुर(विश्व परिवार)। शहर के गीदम रोड स्थित चारपहिया वाहनों के तीन शो-रूम में बीती रात चोरों ने एक संगठित तरीके से धावा बोला. इस वारदात में लगभग 8 लाख रुपए की चोरी हुई है. इस घटना के बाद सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठने लगी है. स्थानीय लोगों में भय का माहौल पैदा है. वहीं पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार रात में 5 चोरों ने एक के बाद एक मारुति सुजुकी, महेंद्रा और टोयोटा शो रूम में घुसपैठ की. हैरानी की बात तो यह है कि सभी शो-रूम में सुरक्षा गार्ड तैनात थे, लेकिन उन्हें चोरी की भनक तक नहीं लगी. सुबह जब शो-रूम के कर्मचारी पहुंचे तो उन्हें चोरी की घटना का पता चला। एक के बाद एक सभी शो-रूम में चोरी की गई थी, जिससे इलाके में हड़कंप मच गया. पुलिस मामले की जांच में जुट गई है. परपा थाना क्षेत्र की इस घटना के बारे में एसडीओपी विश्व दीपक त्रिपाठी ने बताया, चोरों को जल्द पकड़ लिया जाएगा.

घायल को खाट पर लेटा कर पहुंचाया अस्पताल

कांकेर(विश्व परिवार)। जिले में सिस्टम के लाचारी की तस्वीर आई सामने आई, जहां दुर्घटना में घायल को ग्रामीण खाट पर लादकर नदी पार करते नजर आए। घटना नारायणपुर जिले के ओरछा विकासखंड के ग्राम बिरुलेयर गांव की है, जहां घायल केयेराम को ग्रामीणों ने कंधे पर लादकर दुर्गम पहाड़ी और नदी-नालों पर पार कर 15 किमी गट्टाकार पहुंचे, जहां सरपंच व अन्य की मदद से टैक्टर व अन्य जरिए से घायल को अस्पताल पहुंचाया, जहां घायल ग्रामीण का उपचार अभी भी जारी है। बताया गया कि बांस के बनाए घेरे में काम करने के लिए केयेराम बल्ली पेट में लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया था. गांव पहुंचने के लिए सड़क व पुल नहीं होने के कारण संजीवनी वाहन का पहुंचना संभव नहीं था, लिहाजा ग्रामीणों ने खाट में केयेराम को लादकर अस्पताल पहुंचे।

जवानों से मुठभेड़, दुम दबाकर भागे नक्सली

सुकमा(विश्व परिवार)। सुरक्षाबल बस्तर से नक्सलियों को धराशाई करने में जुटे हैं. इस कड़ी में चिंतलनार थाना क्षेत्र के कर्कनगुड़ा इलाके में सुबह हुई मुठभेड़ में डीआरजी, सीआरपीएफ़और कोबरा के जवानों ने नक्सलियों भागने के लिए मजबूर कर दिया. मुठभेड़ के बाद तलाशी अभियान जारी है। वहीं काल यानी सोमवार को एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए नारायणपुर जिले में सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में दो पुरुष और एक महिला नक्सली को मार गिराया था.

खेल मैदान की मांग को लेकर सौपे ज्ञापन

गरियाबंद(विश्व परिवार)। राज्य शासन और जिला प्रशासन द्वारा खेल कूद को महत्व देने हर तरह से युवाओं को प्रोत्साहित कर खेल सामाग्री के लिए राशि तक आबंटित किया जा रहा है लेकिन जिला मुख्यालय से दो किलोमीटर दूर ग्राम के युवक खेल मैदान के लिए कलेक्टर को आवेदन सौप कर मैदान दिलाने की मांग किए।आवेदन में ग्राम आमदी म के युवाओं ने उल्लेख करते हुए बताए की ग्राम के नुतन प्रा.शा.में पुर्व समय में खेल मैदान था किंतु स्कुल बनने के बाद स्कुल के द्वारा खेल मैदान को बाउंड्री बाल कर दिया गया,वही गांव मे अन्य शासकिय भुमि नहीं है जिसे खेल का मैदान बनाया जा सके।जबकि ग्राम के युवा, युवतियां इसी खेल मैदान से प्रशिक्षित हो कर नेशनल स्तर पर खेल कर आ चुके है और गांव के साथ जिले का नाम रोशन कर चुके है।किंतु स्कुल प्रबंधक किरण ध्रुव द्वारा राजनिति करण करके बांड्रीवाल मे गांव के युवायो को अपनी प्रतिभा से वंचित किया जा रहा है।

एक महिला सहित तीन नक्सली ढेर

नारायणपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में सोमवार को पुलिस व नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हो गई। पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में दो पुरुष और एक महिला सहित तीन नक्सली मारे गए। साथ ही सुरक्षा बल के जवानों ने एके 47 और गोला-बारूद बरामद किया गया है। फ्लिहाल तलाशी अभियान जारी है। मिली जानकारी के अनुसार नारायणपुर अबूझमाड़ के क्षेत्र में नक्सलियों की उपस्थिति की सूचना मिली थी। इसके बाद सर्चिंग अभियान पर संयुक्त पुलिस पार्टी गई थी। सर्चिंग के दौरान आज शाम 4 बजे से लगातार पुलिस पार्टी और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ जारी है। दो पुरुष और एक महिला नक्सली मुठभेड़ में मारे गए।च 47 सहित कई अन्य हथियार बरामद किये गए हैं। सभी जवान सुरक्षित हैं और सर्च अभियान जारी है।

अधीक्षक पालक की भूमिका निभाते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करें - कलेक्टर

दूरस्थ अंचलों से छात्र बेहतर शिक्षा के लिए आश्रम और छात्रावासों में आते हैं।

सुकमा(विश्व परिवार)। जिले के आश्रम, छात्रावास और विशिष्ट संस्थाओं के सुचारू संचालन के उद्देश्य से कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने सोमवार को स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति केंद्र परिसर में अधीक्षकों की बैठक आयोजित की। बैठक में कलेक्टर ने छात्रों के समग्र विकास, स्वास्थ्य, सुरक्षा और शैक्षणिक सुधार पर जोर दिया। कलेक्टर श्री ध्रुव ने कहा कि दूरस्थ अंचलों से छात्र बेहतर शिक्षा के लिए आश्रम और छात्रावासों में आते हैं। अधीक्षकों को माता-पिता की तरह छात्रों की देखभाल करनी चाहिए और उनका मृदु व्यवहार रखना चाहिए ताकि छात्र अपनी समस्याएं बिना झिझक साझा कर सकें। उन्होंने विशेष रूप से छात्रों के स्वास्थ्य पर ध्यान देने के निर्देश दिए। संस्थाओं के परिसर की साफ-सफाई, मच्छरदानी का अनिवार्य उपयोग और स्वास्थ्य परीक्षण कर हेल्थ कार्ड में प्रविष्टि को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने आवश्यक सामग्री व्यवस्था प्रत्येक आश्रम छात्रावासों में पेयजल, बिजली, राशन समाग्री दरी, पंखे, राशन समाग्री, भोजन व्यवस्था हेतु थाली, गिलास जैसे बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।साथ ही, दीवारों पर ज्ञानवर्धक चित्र, सामान्य ज्ञान, टीवी में ज्ञानवर्धक विषय वस्तु बच्चों को दिखाने और समय-सारणी प्रदर्शित करने के निर्देश दिए ताकि छात्र नियमित दिनचर्या का पालन कर सकें। सुरक्षा के दृष्टिकोण से कलेक्टर ने सभी कन्या छात्रावासों में महिला होमगार्ड की तैनाती अनिवार्य की, और जहां तैनाती नहीं है, वहां रात्रि सुरक्षा के लिए महिला चौकीदार की व्यवस्था करने को कहा। छात्रावास छोड़ने पर अभिभावक या परिचय पत्र वाले व्यक्ति के साथ ही छात्रों को बाहर जाने की अनुमति देने के निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त, छात्रों के पोषण के लिए फ्लदार वृक्ष लगाने और किचन गार्डन विकसित करने पर भी जोर दिया गया। कलेक्टर ने छात्रों की शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार के लिए कमजोर छात्रों की पहचान कर अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधीक्षकों को रात्रि में छात्रावास में अनिवार्य रूप से निवास करने का निर्देश दिए। बस्तर ओलंपिक की तैयारी के संबंध में भी आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

कब्र खोदार निकाला महिला का शव

गरियाबंद(विश्व परिवार)। तंत्र-मंत्र की सिद्धी पाने के लिए महिला का कब्र खोदकर शव निकालने का सनसनीखेज मामला सामने आया है. यह घटना छुरा थाना क्षेत्र के सिवनी ग्राम की है. इस मामले में पुलिस ने दोषियों के खिलाफ मामला दर्ज कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है. एएसपी जितेंद्र चंद्राकर ने घटना की पुष्टि की है. मिली जानकारी के मुताबिक, भुखन विश्वकर्मा की पत्नी सुनेती विश्वकर्मा की मृत्यु होने के बाद शव को मिट्टी में दफ्नाकर अंतिम संस्कार किया गया था. गांव के ही एक व्यक्ति और उसके अन्य साथी ने लाश को कब्र से बाहर निकालकर पूजा तंत्र विधा जैसा कार्य किया गया था. मृतक के ही मोहल्ले के रहने वाले ने इस घटना को अंजाम दिया है. आसपास पता किए तो पता चला कि गांव के नंदे यादव शाम को रापा फ्वड़ा लेकर शमशान घाट की ओर गया था. गांव में नंदे यादव को बुलाकर पूछे तो कब्र को अपने साथियों के साथ खोदना बताया। मृतक के परिजन एवं ग्रामीणों ने इस मामले की शिकायत छुरा थाने में की. इस घटना के बाद गांव में आक्रोश है. छुरा पुलिस मौके पर पहुंची और सही ढंग से ग्रामीणों एवं परिजनों के माध्यम से खुदी हुई कब्र को ठीक किया. ग्रामीणों को समझाइश देते हुए पुलिस ने मामला शांत कराया. वहीं पुलिस ने 24 घंटे के अंदर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

शासकीय सेवकों के पेंशन भुगतान के लिए जल्द आवश्यक कार्यवाही करें अधिकारी

कलेक्टर ने समय-सीमा बैठक में नियद नेल्लानार के कार्यों की स्वीकृति देने के दिए निर्देश

कांकेर(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री निलेश महादेव क्षीरसागर ने समय-सीमा की साप्ताहिक बैठक लेकर विभिन्न विभागों में लंबित मामलों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हो चुके कर्मचारियों को मिलने वाली पेंशन एवं अन्य राशि के भुगतान में विलंब नहीं किया जाए। अधिकारी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए पेंशन के लंबित प्रकरणों का निराकरण अविलंब और गंभीरता से करें। जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आज सुबह 10.30 बजे से आयोजित टीएल बैठक में कलेक्टर ने नियद नेल्लानार योजना की समीक्षा करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार की मंशानुरूप माओवादी प्रभावित क्षेत्र के चयनित ग्रामों में शासन की योजनाओं का लाभ अनिवार्य रूप से मिले, इसके लिए इसे सर्वोच्च प्राथमिकता में रखकर योजनाओं का क्रियान्वयन करें। ग्रामीणों से प्राप्त आवेदनों का निराकरण सिर्फ कागजों में ही नहीं, धरातल पर भी दिखे। उन्होंने शत-प्रतिशत ग्रामीणों को योजनाओं से लाभान्वित करने आधार, राशन कार्ड व राजस्व विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले दस्तावेजों को प्राथमिकता से तैयार करने के निर्देश संबंधित विभागों के अधिकारियों को दिए। साथ ही स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा कॉमन सर्विस सेंटर का स्थानीय स्तर पर कैंप लगाकर जरूरी कागजात बनाने और शत-प्रतिशत सैचुरेशन के लिए निर्देशित किया। इसी तरह पोषण पुनर्वास केन्द्र में शत-प्रतिशत बेड ऑक्यूपेंसी के लिए स्वास्थ्य विभाग एवं महिला बाल विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए, ताकि कुपोषित बच्चों को समय पर कुपोषण मुक्त कराया जा सके। कलेक्टर ने आकांक्षी जिला एवं ब्लॉक की समीक्षा करते हुए न्यून प्रदर्शन वाले विभागों के मैदानी अमले को सतत् कार्य करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने विभिन्न विभागों में लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए विभागवार प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने, राजस्व विभाग, पुलिस, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, आदिवासी विकास, स्कूल शिक्षा, विद्युत, लोक निर्माण विभाग, वन, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना सहित विभिन्न विभागों में लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए उनके गुणवत्तापूर्ण निराकरण करने के लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया।

जिला न्यायालय परिसर में चलाया गया स्वच्छता अभियान

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय बिलासपुर के निर्देशानुसार महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर स्वच्छ भारत दिवस के अवसर पर 14 सितंबर 2024 से 1 अक्टूबर 2024 तक ''स्वच्छता ही सेवा'' दिवस के रूप में मनाए जाने के लिए निर्देश प्राप्त हुआ हैं। उक्त अभियान के परिपेक्ष्य में प्रधान जिला न्यायाधीश, अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री विजय कुमार होता के निर्देशन में जिला न्यायालय परिसर दंतेवाड़ा में न्यायाधीशगण, अधिवक्तागण एवं न्यायालयीन कर्मचारियों ने परिसर स्थल की साफ सफाई की। इस मौके पर प्रधान जिला न्यायाधीश श्री विजय कुमार होता द्वारा सभी को संबोधित करते हुए बताया कि अपने घरो के अलावा कार्य स्थलों को भी स्वच्छ रखना सभी का कर्तव्य है स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मानसिकता का विकास होता है अत: अपने घर और कार्यस्थल पर हमेशा साफसफाई बनाए रखना जरूरी है। स्वच्छ पर्यावरण और आदर्श जीवन शैली के लिये हर किसी को इसे अपनी आदत मेंष्णुमार करना चाहिये। इसके साथ ही उन्होंने उपस्थितों को स्वच्छता बनाए रखने की शपथ भी दिलाई। अभियान में मुख्य रूप से परिवार न्यायालय के न्यायाधीश श्री संतोष कुमार तिवारी, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री के.के. देवांगन, अपर सत्र न्यायाधीश प्रवीण कुमार प्रधान, दीपक कुमार देशलेहरे, शैलेश शर्मा, शांतनु देशलेहर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री डी. पी. सिंह दांगी, सचिव श्रीमती अपूर्वा दांगी, अन्य न्यायालयीन कर्मचारी तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने मृदा नमूना संग्रहण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण प्रक्रिया का लिया जायजा

किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड से होने वाले लाभों के संबंध में करें जागरूक- कलेक्टर

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने कलेक्ट्रेट परिसर सुकमा में मृदा नमूना संग्रहण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण प्रक्रिया की जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मृदा नमूना संग्रहण की प्रक्रिया के सभी पहलुओं की जानकारी ली। कलेक्टर ने संपूर्णता अभियान के अंतर्गत किसानों तक मृदा स्वास्थ्य कार्ड समय पर पहुँचाने और इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के फायदों के बारे में जागरूक किया जाए और अधिकतम किसानों तक इसका लाभ पहुँचाया जाए। कलेक्टर ने यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि सभी कृषि अधिकारियों द्वारा किसानों के साथ नियमित बैठकें आयोजित की जाएं, जहां उन्हें मृदा स्वास्थ्य कार्ड के लाभों के बारे में जागरूक किया जाए। इस दौरान उप-संचालक कृषि, सहायक संचालक कृषि, और सुकमा विकासखंड के समस्त ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी उपस्थित थे। उप-संचालक कृषि श्री पीआर बघेल ने बताया कि संपूर्णता अभियान के तहत जिले में मृदा नमूना संग्रहण कर टेस्ट के पश्चात किसानों को स्वाइल कार्ड वितरण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मृदा नमूना संग्रहण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

अपने शहर को स्वच्छ रखना हमारा फर्ज -कलेक्टर

स्वच्छता का उत्सव मनाते हुए जिले के शहरी क्षेत्रों में हर चौक-चौराहों, गली-मोहल्लों एवं सार्वजनिक स्थानों में की जा रही सघन साफसफाई

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। स्वच्छता का उत्सव मनाते हुए जिले के शहरी क्षेत्रों में हर चौक-चौराहों, गली -मोहल्लों एवं सार्वजनिक स्थानों में सघन साफ-सफाई की जा रही है। शासन के स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत साफ-सफाई एवं जागरूकता कार्यक्रम ने गति पकड़ ली है और अब यह एक जनआंदोलन बन गया है। स्वच्छता को अपनी आदत एवं व्यवहार में शामिल करके ही हम अपने परिवेश एवं पर्यावरण को अच्छा बना सकते हैं। स्वच्छता के प्रति जागरूकता का यह संदेश घर-घर तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। हर व्यक्ति की छोटी-छोटी मदद और कोशिश से हम अपने शहर एवं परिवेश को स्वच्छ एवं सुंदर बना सकते है। सभी के योगदान से ही अपने आसपास के परिवेश को स्वच्छ एवं सुंदर बना सकते हैं। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल के मार्गदर्शन में स्वच्छता ही सेवा अभियान ने रफ्तार पकड़ी है। अपने शहर को स्वच्छ रखना हमारा फर्ज है। उन्होंने सभी नागरिकों से श्रमदान करने की अपील की है। नगर निगम आयुक्त श्री अभिषेक गुप्ता के निर्देशन में टीम द्वारा शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। जनसहभागिता से नगर निगम एवं नगरीय निकायों में युद्ध स्तर पर सघन साफ-सफाई का कार्य जारी है। गंदगी से बीमारियों पनपती है, इसलिए स्वच्छता जरूरी है। हमर मयारू राजनांदगांव की सार्थकता इस बात में है कि जनसहभागिता के साथ सभी इस स्वच्छता अभियान से जुड़े। शहरी के विभिन्न क्षेत्रों में झिल्ली, पन्नी, कूड़ा-कचरा की साफ-सफाई की जा रही है। जिले के औद्योगिक क्षेत्र ममता नगर, रानी सागर, शीतला मंदिर, शासकीय सर्वेश्वर दास आत्मानंद स्कूल, शासकीय ठाकुर प्यारे लाल स्कूल, नुक्कड़ नाटक, रोड के किनारे, सार्वजनिक स्थानों, शौचालयों में साफ-सफाई की गई। स्वच्छता जागरूकता रैली के साथ ही स्कूलों में रंगोली, पेंटिंग, मैराथन एवं अन्य रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि जनसामान्य स्वच्छता के प्रति जागरूक रहे। शासकीय पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी स्कूल में मैराथन का आयोजन किया गया।

कलेक्टर ने दो श्रद्धालु बस को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

श्री रामलला दर्शन अयोध्या के लिए निकले जिले के 94 श्रद्धालु

कलेक्टर ने श्रद्धालुओं को यात्रा की दी शुभकामनाएं

गरियाबंद(विश्व परिवार)। राज्य शासन द्वारा राज्य के राम भक्तों के लिए श्री रामलला दर्शन हेतु श्री रामलला दर्शन अयोध्या धाम योजना की शुरुआत की गई है। इसके अंतर्गत दर्शनार्थियों को अयोध्या धाम का नि:शुल्क दर्शन कराया जा रहा है। शासन द्वारा प्रत्येक जिलों से चयन कर सभी श्रद्धालुओं को ट्रेन के माध्यम से उन्हें रामलला के दर्शन के लिए ले जाया जा रहा है। इसी क्रम में आज कलेक्टर श्री दीपक अग्रवाल ने गरियाबंद जिले से भी दर्शनार्थियों से युक्त 2 बसों को हरी झंडी दिखाकर कलेक्ट्रेट परिसर से श्रीरामलला दर्शन अयोध्या धाम के लिए रवाना किया। जिले के कुल 94 दर्शनार्थी आज रवाना हुए। इस दौरान कलेक्टर ने सभी यात्रियों को शुभकामनाएं देते हुए सुखद एवं मंगलमय यात्रा की कामना की। 94 श्रद्धालुओं में उनके देख-देख के लिए 4 अनुरक्षक भी शामिल है। चयनित तीर्थ यात्रियों को बस से रायपुर के लिए रवाना किया गया। रायपुर रेलवे स्टेशन से स्पेशल ट्रेन द्वारा श्री रामलला दर्शन अयोध्या धाम की यात्रा के लिए ले जाया जाएगा। यात्रा पश्चात तीर्थयात्रियों की जिला वापसी होगी। इस अवसर पर श्री परस देवांगन, समाज कल्याण विभाग से उप संचालक श्री डीपी ठाकुर, आदित्य लाम्बे सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे। अयोध्या जाने वाले श्रद्धालुओं ने बताया कि विष्णुदेव साय सरकार ने श्री रामलला दर्शन के सपने को साकार किया है। सरकार की मदद से अयोध्या जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अयोध्या में श्री रामलला स्थापना पश्चात वहा जाने की बहुत इच्छा थी। शासन ने वहा जाने में मदद की। श्रद्धालुओं की अयोध्या जाने की इच्छा पूरी करने वाली इस योजना के लिए जिले के श्रद्धालु ने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय का आभार जताया। इसी तरह अन्य श्रद्धालु ने बताया कि वह अयोध्या जाने के लिए बेहद खुश है। वह कहते है कि हमारे पूर्वजों में से भी कोई आज तक अयोध्या नही गए है। शासन के सहयोग से श्री रामलला दर्शन करने का अवसर मिल रहा है। जो कि पूरे प्रदेश वासियों के लिए बड़ी खुशी की बात है। निशुल्क यात्रा के साथ खाने, पीने और रहने की भी व्यवस्था की गई है। इससे श्रद्धालुओं पर कोई आर्थिक बोझ भी नही बढ़ेगा। उल्लेखनीय है कि श्री रामलला दर्शन योजना के तहत् श्रद्धालुओं को पूरा पैकेज मिलेगा। जिसमें छत्तीसगढ़ से अयोध्या जाने, वहां रहने की व्यवस्था, मंदिर दर्शन, नाश्ते और खाने की भी व्यवस्था रहेगी।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर गुरूवार 26 सितंबर 2024

व्यापार समाचार

सैमसंग गैलेक्सी) A14 5G: फ्लिपकार्ट बिग बिलियन डेज़ सेल में केवल 9999 रुपये में उपलब्ध!

नईदिल्ली। भारत के सबसे बड़े कंज्यूकमर इलेक्ट्रॉ निक्सी ब्रैंड सैमसंग ने आज गैलेक्सीम A14 5G पर शानदार ऑफ़र्स की घोषणा की है। यह भारत में सबसे ज्यांदा बिकने वाला स्मा र्टफोन है [1] और ऑफ़र्स फ्लिपकार्ट की आगामी बिग बिलियन डेज़ सेल के दौरान उपलब्धप रहेंगे। उपभोक्ता 26 सितंबर से शुरू हो रहे बिग बिलियन डेज़ में अपना पसंदीदा 5जी स्मार्टफोन खरीद सकते हैं। सैमसंग गैलेक्सी ,A14 5G के 4GB + 128 GB वैरिएंट का शुद्ध प्रभावी मूल्य 9999 रुपये से शुरू होगा, जिसमें 6500 रुपये का रेगुलर डिस्काउंट और 1000 रुपये का इंस्टेंट डिस्काउंट शामिल है (फोन की असली कीमत 17499 रुपये है)। वहीं, 6GB + 128GB वैरिएंट का शुद्ध प्रभावी मूल्य केवल 10999 रुपये होगा, जिसमें 9000 रुपये का रेगुलर डिस्काउंट और 1000 रुपये का इंस्टेंट डिस्काउंट शामिल है (फ़ोन की असली कीमत 20999 रुपये है)। गैलेक्सी,A14 5G में एक सिग्नै0चर फ्लोटिंग कैमरा डिजाइन दी गई है, जिसमें अच्छी गुणवत्ताह की तस्वीरों के लिये सैमसंग गैलेक्सी का डेप्थप और मैक्रो लेंस वाला एकमात्र [2] 50 MP ट्रिपल रियल कैमरा है। इसमें डोल्बीम एटमोस सपोर्ट के साथ 6.6 फुल्ल HD+ डिस्लेपय भी है।

त्यौहारी सीज़न से पहले सैमसंग का खास ऑफर!

नईदिल्ली। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज गैलेक्सी एस, एम और एफ सीरीज़ के चुनिंदा फ्लैगशिप स्मार्टफ़ोन पर बेहतरीन ऑफ़र्स की घोषणा की है। इस ऑफ़र के तहत, ग्राहक इन गैलेक्सी स्मार्टफ़ोन्स को उनके लॉन्च के बाद अब तक की सबसे कम कीमतों पर खरीदने का मौका पा सकते हैं।

गैलेक्सी S23 FE और गैलेक्सी S23- गैलेक्सी S23FE जिसकी मूल कीमत 54999 रुपये थी, अब सिर्फ़ 27999 रुपये में उपलब्ध होगा। इसी तरह, गैलेक्सी S23 जिसकी मूल कीमत 74999 रुपये थी, अब सिर्फ़ 37999 रुपये में मिलेगा।

काउंटरपॉइंट रिसर्च के मुताबिक, गैलेक्सी S23 FE भारत में 30000 रुपये से ज़्यादा कीमत में सबसे ज़्यादा बिकने वाला एंड्रॉयड स्मार्टफ़ोन है। इस साल की शुरुआत में सैमसंग ने गैलेक्सी S23 अल्ट्रा, गैलेक्सी S23 और गैलेक्सी S23 FE सहित कई गैलेक्सी फ्लैगशिप डिवाइस पर गैलेक्सी एआई फ़ीचर शुरू करने की घोषणा की थी, जिसे मोबाइल AI के प्रसार को आगे बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। गैलेक्सी AI फ़ीचर शुरू होने के साथ, गैलेक्सी S23 अल्ट्रा, गैलेक्सी S23 और गैलेक्सी S23 F के यूजर्स सर्किल टू सर्च, लाइव ट्रांसलेट और नोट असिस्ट सहित कई फ़ीचर का फायदा उठा सकेंगे। गैलेक्सी इकोसिस्टम में गैलेक्सी AI का व्यापक इंटीग्रेशन AI-सपोर्टेड मॉडलों पर रोजाना के कामों को पूरा करना आसान बनाता है, जिससे कार्य कुशलता बढ़ती है। गैलेक्सी S23 F में 3× ऑप्टिकल ज़ूम के साथ फ्लैगशिप प्रो-ग्रेड नाइटोग्राफी कैमरा है, जो रात में भी शानदार तस्वीरें खींचता है। यह फ़ोन एक शक्तिशाली 4nm चिपसेट पर चलता है, जो भरोसेमंद प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। इसकी 4500mAh की बैटरी लंबे समय तक चलती है और यह आसानी से एनर्जी सेविंग के लिए एडजस्ट हो जाती है।

मीशो की वार्षिक ''मीशो मेगा ब्लॉकबस्टर सेल'' 27 सितंबर से शुरू होगी, 5 मिनट के अंदर इंस्टैंट रिफंड पेश किया

रायपुर : भारत के एकमात्र ट्रू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस मीशो की अत्यधिक अपेक्षित मीशो मेगा ब्लॉकबस्टर सेल 27 सितंबर, 2024 से शुरू हो रही है। इस सेल में भारत के ग्राहकों को त्योहारों के लिए अनेक किफ़ायती उत्पाद मिलेंगे। 20 लाख से ज्यादा विक्रेताओं और 30 श्रेणियों में 12 करोड़ उत्पादों की सूची के साथ मीशो का उद्देश्य देश के ग्राहकों के लिए त्योहारों की शॉपिंग ज्यादा आसान, किफ़ायती और सुविधाजनक बनाना है।

मीशो मॉल के साथ कंपनी इन त्योहारों पर लाखों भारतीयों के लिए ब्रांडेड उत्पादों की उपलब्धता आसान बना रही है। इसके लगातार बढ़ते पोर्टफ़ोलियो में 1000 राष्ट्रीय, डी2सी और क्षेत्रीय ब्रांड हैं। पिछले दो महीनों में मीशो पर लिबर्टी, बाटा, रेड टेप, डब्लू, ऑरेलिया, गो कलर्स, और ट्विनबड्र्स जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड्स के उत्पाद बिकना शुरू हुए हैं, जिससे इस प्लेटफ़ॉर्म के विशाल संग्रह का और ज्यादा विस्तार हुआ है। मीशो मॉल के 75 प्रतिशत ऑर्डर टियर 2+ बाजारों से आते हैं, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में इस प्लेटफ़ॉर्म की विस्तृत पहुँच और प्रभाव प्रदर्शित होते हैं। मीशो मॉल बड़ी संख्या में ग्राहकों तक ब्रांड्स पहुँचाकर उन्हें इन त्योहारों पर शॉपिंग का असाधारण अनुभव प्रदान करना चाहता है, जिससे लाखों ग्राहकों को अनेक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे। मीशो गोल्ड पर ग्राहकों को त्योहारों पर और कभीकभार के अवसरों के लिए परिधानों का उच्च गुणवत्ता का संग्रह मिलेगा। सितंबर 2023 में अपने लॉन्च के बाद, मीशो गोल्ड ने शॉपिंग के अनुभव में सुधार ला दिया है। यह ग्राहकों तक सुलभ, किफ़ायती और उच्च गुणवत्ता के उत्पाद पहुँचा रहा है। इस प्रोग्राम के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों, जैसे एथनिक वियर, ज्वेलरी, होम एवं किचन उत्पाद, किड्स क्लोदिंग, वेस्टर्न वियर, और एक्सेसरीज़ में 20,000 से ज्यादा उत्पाद उपलब्ध होते हैं। गोल्ड मार्क गुणवत्ता की विश्वसनीयता का प्रमाण है। इसलिए मीशो गोल्ड ग्राहकों को इन त्योहारों पर शॉपिंग का बेहतरीन अनुभव प्रदान करेगा। मेघा अग्रवाल, जनरल मैनेजर, बिज़नेस एट मीशो ने कहा, ''27 सितंबर से शुरू हो रही मीशो मेगा ब्लॉकबस्टर सेल का उद्देश्य इन त्योहारों पर लाखों भारतीयों की शॉपिंग की अपेक्षाओं को पूरा करना है। हम यूज़र-फ्रेंडली फीचर्स, जैसे मीशो बैलेंस और डोरस्टेप एक्सचेंज पेश करने के लिए उत्साहित हैं। ये फीचर्स शॉपिंग का अनुभव सरल और व्यवस्थित बनाने के लिए डिज़ाईन किए गए हैं, ताकि ऑनलाईन शॉपिंग हर किसी के लिए आसान हो सके। हम इन फीचर्स द्वारा अपने ग्राहकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए उत्साहित हैं और लगातार इनोवेशन करते रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं, ताकि इन त्योहारों पर और उसके बाद भी सभी को सुगम शॉपिंग का अनुभव मिलता रहे।''

मुझे टेस्ट क्रिकेट नहीं खेलने का कोई अफसोस नहीं है: धवल कुलकर्णी

जोधपुर(एजेंसी)। भारत के पूर्व तेज गेंदबाज धवल कुलकर्णी ने कहा कि उन्हें देश के लिए टेस्ट क्रिकेट नहीं खेलने का कोई अफसोस नहीं है और वह घरेलू क्रिकेट में मुंबई के लिए अपने पांच रणजी ट्रॉफी खिताब से संतुष्ट हैं। कुलकर्णी, जिन्होंने 2014 में बर्मिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ भारत के लिए पदार्पण किया था, ने देश के लिए 12 वनडे मैच और दो टी20 मैच खेले, जिसमें उन्होंने कुल 22 विकेट लिए। 35 वर्षीय तेज गेंदबाज को अपने प्रभावशाली घरेलू करियर के बावजूद कभी भी टेस्ट क्रिकेट में देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका नहीं मिला। 96 प्रथम श्रेणी मैचों में, उन्होंने मुंबई के लिए 27.11 की औसत से 285 विकेट लिए, जिसमें 15 बार पांच विकेट लेने का कारनामा शामिल है। अनुभवी गेंदबाज ने बताया कि उनके समय में भारतीय टीम में भुवनेश्वर कुमार, मोहम्मद शमी, उमेश यादव और इशांत शर्मा जैसे अच्छे तेज गेंदबाज थे, जिससे टीम में उनके मौके कम हो गए। कुलकर्णी ने कहा, मेरे समय में भारतीय टीम में तेज गेंदबाज थे जो अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे और इसी वजह से मैं टेस्ट नहीं खेल पाया। मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है। मैंने जब भी भारत के लिए खेला, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और मैं इससे संतुष्ट हूं। मैंने मुंबई के साथ पांच रणजी खिताब जीते हैं जो एक बड़ी उपलब्धि है और मैं इससे बहुत खुश हूं। दिग्गज एमएस धोनी और रोहित शर्मा के बीच नेतृत्व कौशल में अंतर के बारे में पूछे जाने पर, तेज गेंदबाज ने कहा, मुझे माही (एमएस धोनी) के नेतृत्व में बहुत खेलने का मौका नहीं मिला, लेकिन रोहित की कप्तानी में मैंने बहुत खेला है। उनके जैसा कप्तान होना जरूरी है। वह टीम के हर एक सदस्य की बात सुनते हैं (पहले से लेकर आखिर तक) और यही बात उन्हें एक पसंदीदा कप्तान बनाती है। वह बहुत स्वागत करने वाले हैं और पूरी टीम को एक साथ बांधे रखते हैं। यह उनकी सबसे बड़ी खूबी है। वह खिलाड़ियों को आत्मविश्वास देते हैं, क्योंकि उन्हें खुद को साबित करने के लिए कम से कम 7-8 मौके मिलते हैं। उन्होंने कहा, धोनी हमेशा एक कदम आगे की सोचते हैं। आईपीएल में उनकी फील्ड प्लेसमेंट बहुत अनोखी है। वह मैदान पर हर चीज पर नजर रखते हैं। उनके पास बहुत अनुभव है, इसलिए रोहित और धोनी अलग-अलग कप्तान हैं। रिटायरमेंट के बाद उनके भविष्य के प्रयासों के बारे में पूछे जाने पर, कुलकर्णी ने कहा, मैं अपना होमवर्क कर रहा हूं (एक कोच के तौर पर)। मुझे आईपीएल या भारतीय टीम में कोच बनने के लिए सभी मानदंडों पर खरा उतरना होगा। कुलकर्णी मौजूदा लीजेंड्स क्रिकेट लीग में इंडिया कैपिटल्स टीम का हिस्सा हैं।

हमें पंत को शांत रखना होगा: कमिंस

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस भारत के स्टार विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत की खेल को संभालने की क्षमता को लेकर चिंतित हैं और उन्होंने कहा कि उनकी टीम को आगामी बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में 26 वर्षीय बल्लेबाज को शांत रखने की जरूरत है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच आगामी पांच मैचों की टेस्ट सीरीज़ 22 नवंबर से शुरू होगी। इस सीरीज़ में भारत और ऑस्ट्रेलिया 22 नवंबर से 7 जनवरी, 2025 तक पर्थ, एडिलेड (गुलाबी गेंद का मैच), ब्रिस्बेन, मेलबर्न और सिडनी में खेलेंगे। भारत पिछले चार लगातार बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में खिताब बरकरार रखने में सक्षम रहा, जिसमें 2018-19 और 2020-21 में उनकी प्रसिद्ध सीरीज़ जीत शामिल है, जहां पंत ने गाबा में नाबाद 89 रनों की शानदार पारी खेली और ऑस्ट्रेलिया के 32 साल के अपराजित क्रम को उनके गढ़ में समाप्त करते हुए शानदार जीत हासिल की। दिसंबर 2022 में एक घातक कार दुर्घटना के कारण 637 दिनों के लंबे इंतजार के बाद, पंत ने बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में शानदार वापसी की, दूसरी पारी में 109 रन बनाए, जिससे भारत को चेन्नई में 280 रनों की जीत हासिल करने में मदद मिली। कमिंस ने स्टार स्पोर्ट्स पर कहा, देखिए, मुझे लगता है कि हर टीम में एक या दो ऐसे खिलाड़ी होते हैं जो खेल को आगे बढ़ा सकते हैं। आप जानते हैं, हमारे पास ट्रैविस हेड और मिच मार्श जैसे खिलाड़ी हैं। मुझे लगता है कि इन खिलाड़ियों के साथ, आप जानते हैं कि वे आक्रामक होने जा रहे हैं। यदि आप अपने क्षेत्र में थोड़ा भी चूक जाते हैं, तो वे खेल को अपने कब्जे में ले लेंगे। ऋषभ जैसा कोई खिलाड़ी, वह रिवर्स लैप खेल सकता है और यह एक अविश्वसनीय शॉट है और यह उसकी शख्सियत का हिस्सा है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि आजकल हम इसके थोड़े अधिक आदी हो गए हैं जब कुछ हास्यास्पद शॉट थोड़े अधिक आम हो गए हैं। वह ऐसा खिलाड़ी है जिसने कुछ श्रृंखलाओं पर बड़ा प्रभाव डाला है और हमें उसे शांत रखने की कोशिश करनी होगी।

कम होने वाले है प्याज के रेट, कीमत नियंत्रित करने के लिए सरकार ने उठाया ये कदम

नई दिल्ली(एजेंसी)। सरकार ने हाल ही में प्याज की कीमतों में वृद्धि पर नियंत्रण पाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्याज की कीमतों में बढ़ोतरी को काबू करने के लिए सरकार ने 'बफर स्टॉक' से प्याज की बिक्री बढ़ा दी है। बता दें, बफर स्टॉक वह भंडार है, जिसे सरकार खाद्य पदार्थों की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए रखती है। यह स्टॉक बाजार में कीमतों को स्थिर रखने के लिए उपयोग किया जाता है। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने बताया कि सरकार ने थोक बाजारों में प्याज की बिक्री को बढ़ा दिया है। यह कदम विशेष रूप से दिल्ली और अन्य बड़े शहरों में उठाया गया है। निधि खरे ने कहा कि जब सरकार ने निर्यात शुल्क हटाया, तब प्याज की कीमतों में वृद्धि का अंदेशा था। वर्तमान में, सरकार के पास 4.7 लाख टन का बफर स्टॉक उपलब्ध है। सरकार 35 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर सब्सिडी वाले प्याज की बिक्री करने की योजना बना रही है। यह बिक्री उन शहरों पर अधिक ध्यान देगी, जहां प्याज की कीमतें अन्य जगहों की तुलना में अधिक हैं। 22 सितंबर को दिल्ली में प्याज की खुदरा कीमत 55 रुपये प्रति किलोग्राम थी, जबकि पिछले साल इसी समय यह कीमत 38 रुपये थी।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में यमुना अथॉरिटी के अपकमिंग प्रोजेक्ट्स का दिखेगा जलवा

ग्रेटर नोएडा(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो में इस बार यमुना प्राधिकरण अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स को लेकर जो स्टॉल लगाएगा, उसमें मॉडल के साथ ही उनकी जानकारी भी दी जाएगी। इस बार यमुना प्राधिकरण खासतौर से उन सभी प्रोजेक्ट से जुड़े स्टॉल लगाएगा, जो जल्द ही लॉन्च हो रहे हैं। यमुना प्राधिकरण को 1,644 स्क्वायर मीटर की जगह अलॉट की गई है, जिसमें 16 स्टॉल लगाए जाएंगे। यमुना प्राधिकरण के सीईओ अरुणवीर सिंह ने बताया कि मुख्य स्टॉल यीडा का लगाया जाएगा। जिसमें फिनटेक सिटी, सेमीकंडक्टर पार्क और सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क की थीम मुख्य रहेगी। उन्होंने बताया कि अभी हाल में ही ग्रेटर नोएडा में सेमीकॉन हुआ था, जिसमें कई निवेशकों ने निवेश में रुचि दिखाई है और हमारे तीन प्रस्ताव केंद्र सरकार के पास हैं, जो जल्द ही अप्रूव हो सकते हैं। इसके साथ-साथ यूएस की कई कंपनियों ने भी निवेश की इच्छा जाहिर की है। सेमीकंडक्टर के लिए हमने जमीन आरक्षित कर दी है और वह हमारे कब्जे में भी आ गई है, जो हमारी मुख्य थीम रहने वाली है। सीईओ ने बताया कि अभी तक हमारे पास आईटी और आईटीएस के लिए कोई भी सेक्टर नहीं था, जिसे देखते हुए अब हम सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क भी डेवलप करने जा रहे हैं। इसमें हमारे साथ विप्रो, इंफोसिस और टाटा जैसी बड़ी कंपनियां साथ आने को तैयार हैं। इसके लिए हमने जमीन चिन्हित कर ली है और बोर्ड बैठक के बाद इस प्रस्ताव को भी लाया जाएगा। इसे भी हम इस यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में हाईलाइट करने जा रहे हैं। 26 सितंबर को यमुना अथॉरिटी की बोर्ड बैठक भी होगी और 25 सितंबर से इंटरनेशनल ट्रेड शो शुरू हो रहा है तो इसी दौरान हमारी कई योजनाएं बोर्ड बैठक में पास भी हो जाएंगी।

हर दिन मुट्ठीभर बादाम से दिल को बनाएं सेहतमंद और खुशहाल

रायपुर। हर साल 29 सितंबर को वर्ल्ड हार्ट डे मनाया जाता है, जिसका मकसद दिल की सेहत के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस दिन डॉक्टर, सरकारी संस्थान और अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर हृदय रोगों और इनके बचाव के बारे में जानकारी देते हैं। हाल के वर्षों में भारत में हृदय रोगों के मामलों में तेजी देखी गई है, जो चिंता का विषय है। एक हालिया अध्ययन में, 45 साल और उससे अधिक उम्र के 29.4 प्रतिशत भारतीयों को खुद ही दिल की बीमारियों का पता चला। इससे यह साफ होता है कि दिल की सेहत को लेकर ज्यादा जागरूकता फैलाने की जरूरत है। अपने दिल को स्वस्थ रखने का एक सरल तरीका है कि आप अपने रोजाना के भोजन में हार्ट हेल्दी फूड जैसे मुट्ठीभर बादाम शामिल करें। दिल की बीमारियों से बचाव में बादाम एक बेहद मददगार साथी हो सकता है। इसमें प्रोटीन, हेल्दी फैट्स, डाइटरी फाइबर, मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे 15 ज़रूरी पोषक तत्व होते हैं, जो दिल को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं रोजाना एक मुट्ठी बादाम खाने से टोटल और एलडीएल कोलेस्ट्रॉल कम किया जा सकता है साथ ही दिल को नुकसान पहुंचाने वाली सूजन भी कम होती है। इसीलिए इसे दिल की सेहत के लिए एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है। वर्ल्ड हार्ट डे के मौके पर बॉलीवुड अभिनेत्री, सोहा अली खान ने कहा दिल की सेहत बनाए रखना बेहद जरूरी है, और इसके लिए संतुलित आहार और एक्टिव रहना महत्वपूर्ण हैं। मैं अपने और अपने परिवार के लिए हमेशा इस बात का ध्यान रखती हूं।

एयरटेल ने स्पैम पर कसी नकेल, स्पैम का पता लगाने के लिए लॉन्च किया भारत का पहला एआई-संचालित नेटवर्क समाधान

नई दिल्ली। देश में स्पैम की समस्या पर अंकुश लगाने के लिए एक अग्रणी कदम उठाते हुए, भारती एयरटेल (एयरटेल) ने भारत का पहला नेटवर्क-आधारित, एआई-संचालित स्पैम डिटेक्शन समाधान लॉन्च किया, जो इसके ग्राहकों के लिए स्पैम कॉल और संदेशों की समस्या का काफी हद तक समाधान कर देगा। देश में किसी दूरसंचार सेवा प्रदाता द्वारा अपनी तरह का यह पहला समाधान, ग्राहकों को सभी संदिग्ध स्पैम कॉल और एसएमएस के बारे में वास्तविक समय में सचेत कर देगा। यह समाधान नि:शुल्क है और सभी एयरटेल ग्राहकों के लिए बिना किसी अनुरोध या ऐप डाउनलोड किए स्वयं सक्रिय हो जाएगा। गोपाल विट्टल, प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, भारती एयरटेल ने कहा, स्पैम ग्राहकों के लिए एक खतरा बन गया है। हमने इस समस्या को हल करने के लिए पिछले बारह महीनों में काफी काम किया हैं। आज उठाया जा रहा है यह कदम एक मील का पत्थर साबित होगा क्योंकि हम देश का पहला एआई-संचालित स्पैम मुक्त नेटवर्क लॉन्च कर रहे हैं जो हमारे ग्राहकों को घुसपैठ और अवांछित संचार के निरंतर हमले से बचाएगा। उन्होंने आगे कहा, दोहरी परत वाली सुरक्षा के रूप में डिज़ाइन किए गए इस समाधान में दो स्तरीय फ़िल्टर हैं - पहला नेटवर्क स्तर पर और दूसरा आईटी सिस्टम स्तर पर। हर कॉल और एसएमएस इस दोहरी परत वाली एआई शील्ड से होकर गुज़रता है। दो मिलीसेकंड में हमारा समाधान हर दिन 150 करोड मैसेज और 250 करोड कॉल प्रोसेस करता है। यह एआई की शक्ति का उपयोग करके वास्तविक समय के आधार पर 10 खरब रिकॉर्ड को प्रोसेस करने के बराबर है। हमारा समाधान हर दिन आने वाले 10 करोड संभावित स्पैम कॉल और 30 लाख स्पैम एसएमएस की सफलतापूर्वक पहचान करने में सक्षम है। हमारे लिए, अपने ग्राहकों को सुरक्षित रखना एक सर्वोच्च प्राथमिकता है। एयरटेल के डेटा वैज्ञानिकों द्वारा इन-हाउस विकसित, एआई-संचालित समाधान कॉल और एसएमएस को संदिग्ध स्पैम के रूप में पहचानने और वर्गीकृत करने के लिए एक मालिकाना एल्गोरिदम का उपयोग करता है। अत्याधुनिक एआई एल्गोरिदम द्वारा संचालित नेटवर्क वास्तविक समय के आधार पर कॉल करने वाले या भेजने वाले के उपयोग पैटर्न, कॉल/एसएमएस आवृत्ति, कॉल अवधि जैसे कई अन्य मापदंडों का विश्लेषण करता है।

जीआरएम ओवरसीज लिमिटेड ने 10X उत्पादों के लिए नई पैकेजिंग लॉन्च की, सलमान खान होंगे ब्रांड का चेहरा

रायपुर। जीआरएम ओवरसीज लिमिटेड, भारत में तेजी से बढ़ती एफएमसीजी कंपनी, ने अपने 10X ब्रांड के उत्पादों के लिए नई पैकेजिंग पेश की है, जिसमें बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान का चेहरा होगा। यह कदम कंपनी के ब्रांड को अधिक लोगों तक पहुँचाने और ग्राहकों के साथ संबंध मजबूत करने की दिशा में है। इस नई पैकेजिंग में सलमान खान को प्रमुखता से दिखाया जाएगा और इसे बासमती चावल, आटा और अन्य उत्पादों पर लागू किया जाएगा। नया डिजाइन आधुनिक और आकर्षक है, जो 10X ब्रांड की गुणवत्ता और प्रामाणिकता को दर्शाता है। यह पैकेजिंग ब्रांड की नई ऊर्जा को दिखाती है और उन उपभोक्ताओं को पसंद आएगी जो गुणवत्ता और विश्वसनीयता की मांग करते हैं। जीआरएम ओवरसीज के मैनेजिंग डायरेक्टर, अतुल गर्ग ने कहा, हम सलमान खान के साथ नई पैकेजिंग पेश करके बहुत खुश हैं। सलमान मजबूत और विश्वसनीय व्यक्तित्व वाले हैं और वे हमारे ब्रांड के लिए एकदम सही चेहरा हैं। यह नया पैकेजिंग डिजाइन हमारे उत्पादों की उच्च गुणवत्ता का वादा है। हमें लगता है कि सलमान खान की उपस्थिति उपभोक्ताओं के बीच हमारे ब्रांड को और लोकप्रिय बनाएगी। यह नया पैकेजिंग डिजाइन जीआरएम की 10X ब्रांड को ताजगी देने और बाजार में उसकी पहचान बढ़ाने की योजना का हिस्सा है। सलमान खान की लोकप्रियता का फायदा उठाकर, जीआरएम विभिन्न उपभोक्ता समूहों, खासकर भारत और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में, तक अपनी पहुँच बढ़ाना चाहता है। हाल ही में, कंपनी ने रेज कॉफी के मालिक स्वमभान कॉमर्स प्राइवेट लिमिटेड में बड़ा निवेश किया है। जीआरएम ने इस कंपनी में 44% हिस्सेदारी हासिल की है और यह भारतीय कॉफी बाजार में अपनी उपस्थिति को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। खाद्य उत्पादों जैसे चावल, आटा, मसाले, और खाद्य तेलों के साथ 1974 में स्थापित जीआरएम एक प्रभावशाली भारतीय कंपनी है, जिसका लक्ष्य अपने उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता के उत्पाद प्रदान करना है।

विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 26 सितंबर 2024

उप मुख्यमंत्री साव नगरीय निकायों के कार्यों की करेंगे समीक्षा

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव राज्य के सभी नगरीय निकायों के कार्यों की समीक्षा करेंगे। वे 26 सितम्बर को मंत्रालय में वरिष्ठ विभागीय अधिकारियों तथा नगर निगमों के आयुक्तों और नगर पालिकाओं के मुख्य नगर पालिका अधिकारियों के साथ योजनाओं के क्रियान्वयन और विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। वे अगले दिन 27 सितम्बर को रायपुर के नवीन विश्राम भवन में सभी नगर पंचायतों के कार्यों की समीक्षा करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

मुरारी लाल अग्रवाल को जेसीआई इंडिया डायमंड जुबली सेलिब्रेशन में किया सम्मानित

रायपुर (विश्व परिवार)। जेसीआई इंडिया के द्वारा जेसीआई संस्था के भारत में गठन के पूरे 75 वर्ष होने पर कलकत्ता में डायमंड जुबली सेलिब्रेशन आयोजित किया गया इस आयोजन में रायपुर के मुरारी लाल अग्रवाल को पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में सम्मानित किया गया यह सम्मान जेसीआई इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश शर्मा द्वारा सम्मेलन में किया गया मुरारी लाल अग्रवाल 1999 में पदाधिकारी थे।

सड़क दुर्घटनाओं से सम्बंधित समस्याओ के नियंत्रण हेतु वर्चुअल समीक्षा बैठक सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। सड़क दुर्घटनाओं के कारणों के समुचित विश्लेषण तथा आवश्यक सुधार कार्यो हेतु इंटीग्रेटेड रोड् एक्सीडेंट डाटाबेस में सड़क दुर्घटनाओं की शत प्रतिशत प्रविष्टियां अंकित करने तथा हिट एण्ड रन के क्षतिपूर्ति प्रकरणों को निर्धारित समयावधि में दावा प्राधिकरण को प्रेषित कर प्रभावितों को यथाशीघ्र राहत हेतु पहल सहित सड़क दुर्घटनाओं के नियंत्रण के उपायों के संबंध में श्री प्रदीप गुप्ता भा.पु.से. अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (यातायात) की अध्यक्षता में वर्चुअल समीक्षा बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में ए.आई.जी. टैफिक संजय शर्मा सहित प्रदेश में यातायात के समस्त अति.पुलिस अधीक्षक/उप पुलिस अधीक्षक, प्रभारी यातायात गण/पर्यवेक्षण अधिकारी सम्मिलित हुए।

रक्तदान शिविर का आयोजन 1 अक्टूबर को

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला अस्पताल पंडरी में 1 अक्टूबर 2024 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 5 बजे तक आयोजित किया जाएगा। इस शिविर का उददेश्य लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए जागरूक करना और जरूरतमंद को रक्त उपलब्ध कराना है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर उन्हें किया नमन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज जशपुर जिले के मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय बगिया में एकात्म मानववाद के प्रवर्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया है। विष्णुदेव साय ने कहा है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे युगदृष्टा थे, जिनके विचारों व सिद्धांतों ने देश को एक प्रगतिशील विचारधारा देने का काम किया। श्री साय ने कहा कि उनकी विचारधारा राष्ट्र के पुनर्निर्माण और भारत के गौरव को पुन: स्थापित करने के लिए थी। उन्होंने जन समुदाय को सशक्त बनाने की दिशा में आजीवन काम किया। उनका मानना था कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति का विकास नहीं होता, तब तक समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। इस विचारधारा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के चलते उनके जन्मदिन को अंत्योदय दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भारतीय समाज में गरीबों और वंचितों के उत्थान के प्रति समर्पण को दर्शाता है। उनके अंत्योदय सिद्धांत पर चलकर हम समस्त जनमानस का जीवन स्तर बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे सदैव हमारे प्रेरणास्त्रोत रहेंगे।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने स्वच्छता मैराथन को दिखाई हरी झंडी

अरुण साव ने उद्यान में झाड़ू लगाकर सफाई की, स्वच्छता दीदियों को बांटे किट और साड़ी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर उन्हें नमन किया

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने एकात्म मानववाद के प्रणेता, प्रसिद्ध विचारक एवं चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर उन्हें सादर नमन किया है। उन्होंने बिलासपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। वे इस दौरान बिलासपुर नगर निगम द्वारा आयोजित श्स्वच्छता ही सेवाश् पखवाड़ा में भी शामिल हुए। उन्होंने विधायकों और अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ उद्यान में झाड़ू लगाकर सफाई की।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने स्वच्छता मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने स्वच्छता दीदियों को साड़ी और किट भी वितरित किए। विधायक श्री धरमलाल कौशिक, श्री धरमजीत सिंह और श्री सुशांत शुक्ला, जिला पंचायत के अध्यक्ष श्री अरुण सिंह चौहान, कलेक्टर श्री अवनीश शरण और नगर निगम के आयुक्त श्री अमित कुमार भी स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय देश के बड़े विचारक और चिंतक थे। उन्होंने आधुनिक राजनीति को नई दिशा दी। देश की विरासत के अनुरूप हमारा देश तरक्की करे, यह उनका विचार था। उनकी विचारधारा के अनुरूप विकास कर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी देश को और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय प्रदेश को आगे ले जा रहे हैं। पूरी दुनिया यह मान रही है कि 21वीं सदी भारत की है और भारत देश ही विश्व का नेतृत्व करेगा।

श्री साव ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, बाबा साहब अंबेडकर और पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वच्छता को जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया। इसका सीधा संबंध हमारी बेहतरी और स्वास्थ्य से है। भारत सरकार एवं राज्य सरकार स्वच्छता पर लगातार काम कर रही है। जन भागीदारी और जन सहयोग से ही स्वच्छता का मिशन पूरा और सफल होगा। उन्होंने बताया कि उद्यान में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की नई प्रतिमा स्थापित करने के लिए पार्षद दुर्गा सोनी ने पांच लाख रुपए देने की घोषणा की है।

समारोह को विधायक श्री धरमलाल कौशिक ने भी संबोधित किया। श्स्वच्छता ही सेवाश् पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित स्वच्छता मैराथन में शहर के सभी वर्गों के लोगों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों के लिए चौक-चौराहों पर नगर निगम द्वारा पानी और ग्लूकोज की व्यवस्था की गई थी। छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सवन्नी, नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष श्री राजेश सिंह और जिला पंचायत के सीईओ श्री आर.पी. चौहान भी कार्यक्रम में मौजूद थे।

किसानों को गुणवत्तापूर्ण बिजली देने राजिम में बन रहा 220 केव्ही उपकेन्द्र, ग्रीष्मकाल में बढ़ जाता है विद्यमान प्रणाली पर लोड

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी प्रदेश में किसानों को गुणवत्तापूर्ण एवं निर्बाध विद्युत की आपूर्ति के लिए अपनी पारेषण क्षमता में निरंतर वृद्धि कर रही है। इस कड़ी में राजिम स्थित विद्यमान 132 के.व्ही. उपकेन्द्र का 220 के.व्ही. में उन्नयन किया जा रहा है। इसकी लागत लगभग 82 करोड़ रुपए है, जिसमें 35 कि.मी. लंबी 220 के.व्ही. डबल सर्किट लाईन का निर्माण भी सम्मिलित है। विभागीय अमले में निर्माण कार्य की दक्षता कायम रखने इस उपकेन्द्र के उन्नयन का कार्य लेबर कांट्रेक्ट पर कंपनी के इंजीनियरों के निर्देशन में किया जा रहा है।

प्रबंध निदेशक श्री शुक्ला ने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देश एवं पॉवर कंपनी के अध्यक्ष श्री पी.दयानंद के कुशल नेतृत्व में ट्रांसमिशन कंपनी पारेषण प्रणाली की दक्षता पर विशेष ध्यान दे रही है एवं लक्ष्य तय कर उसके अनुरूप अंत:राज्यीय विद्युत अधोसंरचना का विकास निरंतर किया जा रहा है। राजिम एवं आसपास के क्षेत्र के लिए वर्तमान में विद्युत की आपूर्ति क्रमश: 220 के.व्ही.उपकेन्द्र गुरूर (बालोद), परसवानी (महासमुंद) एवं सरायपाली से जारी है, जिसमें ग्रीष्मकाल में लोड में वृद्धि हो जाती है। अत: राजिम में निर्माणाधीन 220 के.व्ही. उपकेन्द्र का कार्य आगामी ग्रीष्म ऋतु के पूर्व पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। इस उपकेन्द्र के लिए दोनों ट्रांसफॉर्मर राजिम आ गये हैं।

ट्रांसमिशन कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री राजेश कुमार शुक्ला ने वरिष्ठ अभियंताओं के साथ इस कार्य का अवलोकन किया एवं कार्य की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए इस उपकेन्द्र को आगामी ग्रीष्मकाल के पूर्व उर्जीकृत करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किये ताकि आगामी फसलचक्र तक किसानों को वोल्टेज की समस्या उत्पन्न न हो एवं उन्हें गुणवत्तापूर्ण बिजली प्राप्त हो सके।

राजिम में ट्रांसमिशन कंपनी का 132 के.व्ही.उपकेन्द्र वर्ष 2003 से क्रियाशील है। इस उपकेन्द्र के साथ लगी रिक्त भूमि पर 220 के.व्ही. उपकेन्द्र का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें 160 एम.व्ही.ए. के दो ट्रांसफॉर्मर स्थापित हो सकेंगे। इस उपकेन्द्र के लिए 220 के.व्ही. डबल सर्किट लाईन का कार्य भी जारी है।

इस अवसर पर एम.डी. श्री शुक्ला के साथ कार्यपालक निदेशक सर्वश्री के.एस.मनोठिया, आर.सी. अग्रवाल, डी.के. तुली, जी. आनंद राव, अति. मुख्य अभियंता चंद्रकला गिडवानी, अधीक्षण अभियंता व्ही.ए.देशमुख, राजेंद्र राठौर, आर.के.तिवारी, करूणेश यादव, यू.आर.मिर्चे, कार्यपालन अभियंता प्रत्युष अग्रवाल, शिव कुमार गुप्ता, दीपक आहार, उमाकांत यादव एवं सहायक अभियंता प्रोबल मित्रा उपस्थित थे।

एनटीपीसी नवा रायपुर ने स्वच्छता ही सेवा के तहत निवारक स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया

रायपुर (विश्व परिवार)। 17 सितंबर से 02 अक्टूबर, 2024 तक स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के दौरान सफाई मित्र सुरक्षा शिविर के हिस्से के रूप में, एनटीपीसी नवा रायपुर ने 25 सितंबर, 2024 को हाउस कीपिंग स्टाफ, आईसीएच स्टाफ, सुरक्षा गार्ड और अन्य लोगों के लिए अपने कार्यालय में निवारक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया।

श्री बालाजी अस्पताल, रायपुर के डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ ने शिविर का संचालन किया, जिसमें 93 व्यक्तियों की शारीरिक और रक्त जांच हुई। इससे पहले, डॉ रंजीता साहू ने स्वच्छता और स्वस्थ जीवन शैली पर बात की।

अपने भाषण में, डॉ साहू ने सभी प्रतिभागियों को कार्यस्थल और घर दोनों में दिन-प्रतिदिन की जीवन शैली में व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा। शिविर का समन्वय एनटीपीसी नवा रायपुर के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. अजय सिंह ठाकुर ने किया।

श्रमिकों के लिए न्यूनतम वेतन एवं परिवर्तनशील महंगाई भत्ते की दरें जारी

रायपुर (विश्व परिवार)। श्रमायुक्त छत्तीसगढ़ शासन द्वारा न्यूनतम वेतन अधिनियम 1948 के अंतर्गत 45 अनुसूचित नियोजनों, कृषि नियोजन एवं अगरबत्ती नियोजन में कार्यरत श्रमिकों के लिये महंगाई भत्ते का निर्धारण लेबर ब्यूरो शिमला द्वारा जारी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आधार पर वर्ष में दो बार (01 अप्रैल एवं 01 अक्टूबर) किया जाता है।

श्रमायुक्त छत्तीसगढ़ शासन श्रीमती अलरमेल मंगई डी. द्वारा विभिन्न अनुसूचित नियोजनों में कार्यरत् श्रमिकों के लिये 01 अक्टूबर 2024 से परिवर्तनशील मंहगाई भत्ता निर्धारित की गई है। लेबर ब्यूरों शिमला से प्राप्त औद्योगिक सूचकांक में जनवरी 2024 से जून 2024 के मध्य 2.40 बिन्दु की औसत वृद्धि हुई तदनुसार प्रति बिन्दु 20/- रूपये के मान से 45 अनुसूचित नियोजनों में कार्यरत श्रमिकों के परिवर्तनशील महंगाई भत्ता में प्रतिमाह 48/- रूपये की वृद्धि की गई। कृषि नियोजन में कार्यरत श्रमिकों हेतु लेबर ब्यूरो शिमला से प्राप्त सूचकांक में 29 बिन्दु की औसत वृद्धि होने से 5/- रूपये प्रति बिन्दु के मान से 145/- रूपये प्रतिमाह परिवर्तशील महंगाई भत्ते में वृद्धि की गई। अगरबत्ती उद्योग में नियोजित श्रमिकों हेतु उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में औसत वृद्धि के आधार पर परिवर्तनशील महंगाई भत्ते 7.21 रूपये प्रति हजार अगरबत्ती निर्माण में निर्धारित की गई। किसी तम्बाखू विनिर्माण में नियोजित श्रमिकों हेतु उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में औसत वृद्धि के आधार पर परिवर्तनशील महंगाई भत्ते 28.30 रूपये प्रति हजार बीड़ी के मान से निर्धारित की गई।

युवाओं को बेहतर रोजगार दिलाने राज्य के 160 आईटीआई को बनाया जा रहा है आधुनिक : राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा

रायपुर (विश्व परिवार)। राजस्व मंत्री श्री टंक राम वर्मा ने कहा है कि छत्तीसगढ़ सरकार युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर दिलाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में छत्तीगसगढ़ के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में उद्योगों की मांग अनुरूप आधुनिक ट्रेडों में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में युवाओं के लिए रोजगार परक प्रशिक्षण के लिए प्रदेश के 160 आईटीआई को माडल आईटीआई के रूप में विकसित किया जा रहा है। इन आईटीआई को 484 करोड़ रूपए की लागत से आगामी तीन वर्षों में आधुनिक किया जाएगा। राजस्व मंत्री श्री वर्मा आज शासकीय आईटीआई बलौदाबाजार में आयोजित आभार सम्मेलन का संबोधित करते हुए बताया कि इस संस्थान को मॉडल आईटीआई बनाने के लिए पहले चरण में 20 करोड 13 लाख 65 हजार रुपए स्वीकृत हुए हैं।

बलौदाबाजार में मॉडल आईटीआई के लिए 20 करोड़ रूपये स्वीकृत

आभार सम्मेलन को संबोधित करते राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा ने कहा कि छात्र जीवन का समय बहुत अनमोल है। युवा अपने सपनों को पूरा करने में ज्यादा ध्यान दें। विद्यार्थियों को बेहतर भविष्य के लिए त्याग तथा समर्पण के साथ मेहनत करनी चाहिए। उन्होंने युवाओं को सफल व्यक्तियों से प्रेरणा लेने के साथ ही सोशल मीडिया से दूर रहने की समझाइश दी। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य ने अजय गढ़वाल ने सकरी आईटीआई को मॉडल आईटीआई में चयनित करने के प्रति राजस्व मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष छत्तीसगढ़ स्काउट एवं गाईड विजय केसरवानी,एसडीएम अमित गुप्ता,तहसीलदार राजू पटेल उपस्थित रहे।

गौरतलब है कि बलौदाबाजार के सकरी स्थित आईटीआई को मॉडल आईटीआई बनाने कंप्यूटर हार्डवेयर एण्ड नेटवर्क मेंटनेंस के लिए 1 करोड 5 लाख रूपये, इलेक्ट्रिशियन के लिए 75 लाख रूपये, फिल्टर 46 लाख रूपये, मैकेनिक डीजल 44 लाख रूपये, वेल्डर के लिए 53 लाख रूपये, नया बिल्डिग कंट्रक्शन के लिए 3 करोड 44 लाख 59 हजार रूपये स्वीकृत किए गए है। इसके अलावा गार्ड रूप कंट्रक्शन के लिए 7 लाख 42 हजार रूपये मोटर कार पार्किंग के लिए 1 करोड 25 लाख 28 हजार रूपये स्टॉफ क्वाटर निर्माण के लिए 11 करोड 75 लाख 56 हजार रूपये, बाउंड्रीवाल एवं मुख्य द्वारा निर्माण के लिए 34 लाख 80 हजार रूपये की स्वीकृति मिली हैं।

देश के प्रत्येक विद्यार्थी की बनेगी यूनिक आईडी

एक राष्ट्र-एक छात्र : अपार आईडी योजना का जल्द क्रियान्वयन

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्पना के अनुरूप देश के प्रत्येक विद्यार्थी की पहचान सुनिश्चित करने के लिए उन्हें यूनिक आईडी प्रदान की जाएगी। इसके लिए ऑटोमेटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउंट रजिस्ट्री आईडी (अपार आईडी) योजना का पूरे देश में लागू किए जाने की पहल शुरू कर दी गई है। यह योजना तीन चरणों में लागू होगी। प्रथम चरण में कक्षा 9वीं से 12वीं तक अध्ययनरत विद्यार्थियों को यूनिक आईडी प्रदान की जाएगी। दूसरे चरण में कक्षा 6वीं से लेकर 8वीं तथा अगले चरण में पहली से लेकर पांचवीं तक विद्यार्थियों की यूनिक आईडी बनाई जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत विद्यार्थियों के समग्र विकास और शैक्षिक प्रगति को ट्रैक करने के साथ ही एक राष्ट्र एक छात्र आईडी की परिकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करना है। अपार आईडी योजना के क्रियान्वयन के संबंध में छत्तीसगढ़ शासन के स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय द्वारा सभी जिला कलेक्टरों को निर्देश जारी किया गया है।

अपार आईडी को डिजिलॉकर से जोड़ा जाएगा, जिससे छात्रों की शैक्षिक प्रगति, परीक्षा परिणाम, रिपोर्ट कार्ड और अन्य उपलब्धियों का डिजिटल रिकॉर्ड सुरक्षित और आसानी से उपलब्ध होगा। यह आईडी भविष्य में उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए क्रेडिट स्कोर के रूप में उपयोगी होगी। भारत शासन के शिक्षा मंत्रालय ने सभी स्कूलों को निर्देश दिए हैं कि 3-4 अक्टूबर 2024 को पालक-शिक्षक बैठक का आयोजन कर अभिभावकों से छात्रों की अपार आईडी बनाने के लिए सहमति ले। सहमति पत्र के आधार पर स्कूल के प्रधानाध्यापक या प्राचार्य यूडाईस प्लस पोर्टल पर जानकारी प्रविष्ट करने से आईडी स्वत: तैयार हो जाएगी।

आरआईटीईई कॉलेज ऑफ फार्मेसी में मनाया गया वर्ल्ड फार्मासिस्ट डे

रायपुर (विश्व परिवार)। राजधानी रायपुर के प्रतिष्ठित महाविद्यालय आरआईटीईई कॉलेज ऑफ फार्मेसी में वर्ल्ड फार्मासिस्ट डे थीम: फार्मासिस्टस: मीटिंग ग्लोबल हैल्थ नीडस मनाया गया। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. नागेन्द्र सिंग चौहान, सीनियर साइंटिस ऑफिसर, ड्रग्स टेस्टिंग लेबोरेटरी एवम अनुसंधान केन्द्र, रायपुर, छत्तीसगढ, सचिव महानदी एजुकेशन सोसाइटी रायपुर, माननीय श्री शैलेन्द्र जैन, ग्रुप डायरेक्टर डॉ जयेश कारिया, फॉर्मेसी प्राचार्य डॉ. सत्यव्रता भांजा व इंजीनियरिंग प्राचार्य डॉ. श्री मनीष सखलेचा, प्राध्यापक चंद्रशेखर साहू एवं डॉ. बिबेकानंद मेहेर ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर व विद्यार्थियों (रॉखी एंड ग्रुप) द्वारा राजकीय गीत के साथ कार्यक्रम की शुरुआत किया। मुख्य अतिथि डॉ. नागेन्द्र सिंग चौहान ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि फार्मासिस्ट डॉक्टर मरीज के बीच का सेतु है। शारीरिक जटिलताओं को लेकर अनुसंधान हो रहे हैं और हर दिन विभिन्न फार्मेसी कंपनियों द्वारा नए नए तरह के दवाईया इजाद हो रहे है। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में फार्मासिस्ट की भूमिका अहम होती है। स्वास्थ्य तंत्र की महत्तवपूर्ण दवा अपूर्ति जैसा महत्वपूर्ण कार्य फार्मासिस्टों द्वारा किया जाता है इसलिए फार्मासिस्ट की सेवाओं के बिना स्वास्थ्य सेवा की कल्पना संभव नहीं है, फार्मासिस्ट अपने विशेष तकनीकी ज्ञान से दवाओं के निर्माण, उपयोग विधि, मानव शरीर पर प्रभाव व दुष्प्रभाव, रखरखाव के साथ-साथ दवाओं के चयन व अनुचित उपयोग की सलाह चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मियों को देने का काम करते हैं। इस तरह फार्मासिस्ट स्वास्थ्य तंत्र की रीढ़ की तरह है।

वर्ल्ड फार्मासिस्ट डे के अवसर पर नाटक (मीनू एंड ग्रुप, शीर्षक जेनेरिक दवा का महत्व व अनिरुद्ध एंड ग्रुप शीर्षक फॉर्मेसी कैरियर) की प्रस्तुति ने कार्यक्रम मे चार चाँद लगा दिया। प्रश्नोत्तरी, ट्रेजर हंट, मेहंदी, रंगोली, मेडिसिनल प्लांट प्रेजेन्टेशन, बुके मेकिंग व नाटक का अयोजन व पुरूस्कार वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन मानसी सेन के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संस्था के रजिस्ट्रार श्री निरंजन पंडित एवम विभिन्न संकाय के विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354